पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएमपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंक:-६, मार्च, सन्-२०२०, सं०-२०७७ वि०, दयानंदाब्द १९६, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२१; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

सरयू बाग, अयोध्या में 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-स्मारक' का शिलान्यास सम्पन्न

भूमि पूजन के समय 'हनुमत्कृपा' का मिला संकेत

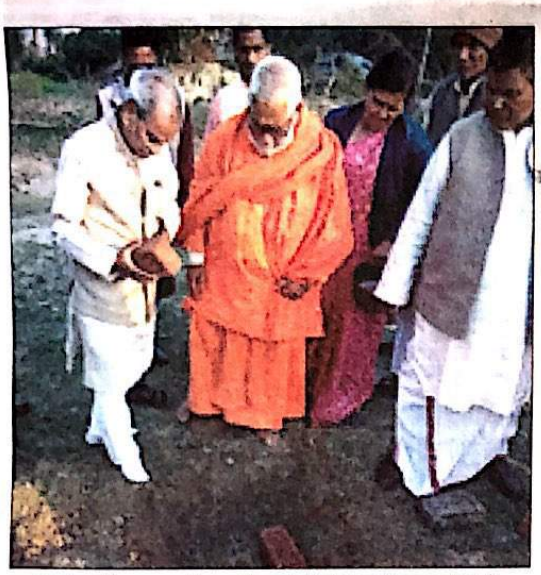

स्मारक का शिलान्यास करते हुए आर्य समाज के गौरव स्वामी प्रणवानन्द(मध्य में), कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य (बांये) तथा आचार्य नागेन्द्र शास्त्री (दायें)

परिव्राजकाचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज अपनी अखिल भारतवर्षीय वेद प्रचार यात्रा के दौरान- भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष चतुर्दशी तदनुसार १८ अगस्त, सन् १८७६ को श्रीरामजन्मभूमि अयोध्या नगरी पहुँचे थे। यहाँ सरयूबाग में चौधरी गुरुचरण लाल के मंदिर में ठहरे। श्रीरामजन्मभूमि व अयोध्या को वेदभाष्य हेतु सर्वोत्तम समझते हुए महर्षि ने इस स्थल को अपने जीवन के महत्संकल्प- वेदभाष्य हेतु सर्वाधिक उपयुक्त समझा और यहाँ बैठकर वेदभाष्य की रचना प्रारंभ की। चारों वेदों के भाष्य की प्रस्तावना 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के रूप में स्वामी जी ने यहीं पर तैयार की। स्वामी जी महाराज ने इस वेदभाष्य के गौरव ग्रंथ की रचना भाद्रशुक्ल प्रतिपदा संवत् १९३३ वि. से प्रारंभ की तथा मार्गशीर्ष पूर्णिमा १ दिसम्बर, १८७६ को इसे पूर्णता प्रदान की। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका ही वह ग्रंथ है; जिसके कारण देश में नवजागरण का प्रस्फुरण हुआ।

सरयूबाग का यह स्थल १४० वर्ष तक सुनसान पड़ा रहा और आर्यजनों को इस स्थान पर कोई मंदिर-स्मारक बनाने का विचार ही नहीं उत्पन्न हुआ। इस स्थल की पवित्रता और ऐतिहासिकता की ओर आर्यजनों का ध्यान उस समय आकृष्ट हुआ; जब १० से १४ नवम्बर सन् २०१६ तक आर्यसमाज टाण्डा जनपद अम्बेडकरनगर का शताब्दोत्तर रजत जयन्ती महोत्सव मनाया गया तथा इससे एक दिन पूर्व ६ नवम्बर २०१६ को कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य की ८०वीं जयन्ती मनाई गई। पं. दीनानाथ शास्त्री की मूलप्रेरणा से कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य, माननीय न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी, लोकायुक्त, राजस्थान ने अयोध्या की इस पुण्यभूमि के सम्यक् निरीक्षणोपरान्त यह संकल्प लिया कि यहाँ पर ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का भव्य स्मारक बनना चाहिये। अयोध्या में रामजन्मभूमि मंदिर निर्माण एवं सरयू बाग में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के भव्य स्मारक निर्माण के मध्य कई समानताएँ परिलक्षित होती हैं।

प्रयोजन साम्य

जहाँ श्रीराम हैं, श्रीरामजन्म भूमि है, वहाँ पर वेदभाष्य है, वेदभाष्य का मंदिर स्मारक है। श्रीराम और वेद का अन्योन्याश्रित संबन्ध है। गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज के अनुसार श्रीराम के जन्म का उद्देश्य ही वेदमार्ग (श्रुति सेतु) की रक्षा करना था-

असुर मारि थापहिं सुरन्ह,
राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग विस्तारहिं विमल जस,
राम जन्म कर हेतु।।

इतना ही नहीं, श्रीराम ने मुनिवर विश्वामित्र के गुरुकुल में रहकर चारों वेदों की विधिवत् शिक्षा ही नहीं प्राप्त की, वरन् उन्हें पूर्णरूपेण आयत्त भी कर लिया था- गोस्वामी जी यहाँ भी इस बात का निम्नांकित अर्द्धाली में स्पष्ट उल्लेख करते हैं-

जाकी सहज स्वास श्रुति चारी,
सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी।

तिथि साम्य

ऐसी स्थिति में जबकि दिनांक ६ नवम्बर २०१६ को सत्तर वर्ष के अनथक संघर्षों के पश्चात् माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सर्वसम्मत निर्णयानुसार अयोध्या में रामजन्म भूमि मंदिर का निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो गया और ऋषियों मुनियों की मंडली ने रामजन्मभूमि पर भव्य और दिव्य राम मंदिर निर्माण का व्रत लिया तो इसी के चार महीने बाद ही दिनांक २७ फरवरी २०२० दिन गुरुवार के शुभ मुहूर्त में पुण्यभूमि सरयूबाग, अयोध्या में एक देवर्षि मंडल का अवतरण हुआ, जिसने उस ऐतिहासिक स्थल पर जहाँ युग प्रवर्तक, भारतीय नव जागरण के पुरोधा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने बैठकर अपने युगान्तरकारी वेदभाष्य का निर्माण किया था- ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्मारक निर्माण का संकल्प लिया।

इस प्रकार भारत के सांस्कृतिक इतिहास में तीन तिथियां स्वर्णाक्षरों में अंकित होने योग्य हैं। प्रथम तिथि है- ६ नवम्बर, २०१६ द्वितीय तिथि है- ६ नवम्बर, २०१६ तृतीय तिथि है- २७ फरवरी, २०२०।

६ नवम्बर २०१६- सरयूबाग अयोध्या में वेदभाष्य स्मारक निर्माण की संकल्प तिथि। ६ नवम्बर २०१६- सर्वोच्च न्यायालय के सर्वसम्मत निर्णय द्वारा रामजन्मभूमि स्थल पर मंदिर निर्माण की अनुमति प्राप्त हुई तथा २७ फरवरी २०२० को सरयूबाग, अयोध्या में वेद भाष्य स्मारक निर्माण हेतु भूमि पूजन यज्ञ हवन के साथ स्मारक निर्माण की आधारशिला रखी गई।

यज्ञ के अवसर पर हनुमत्कृपा – एक अद्भुत संयोग

प्रेरणा साम्य

रामजन्मभूमि मंदिर तथा वेदभाष्य स्मारक दोनों अनुष्ठानों में एक अन्य समानता भी ध्यान देने लायक है। वह है- दोनों योजनाओं में समान रूप से मो.इरफान अन्सारी की सहयोग पूर्ण भूमिका। रामजन्मभूमि मंदिर हेतु भूमि प्राप्ति के मामले में श्री मो.इरफान अंसारी का योगदान सभी को अच्छी तरह ज्ञात है। दूसरी योजना अर्थात् ऋग्वेदादिभाष्य स्मारक हेतु जो भूमि प्राप्त हुई है उसे पीछे भी मो.इरफान अन्सारी ही खड़े हैं अर्थात् सरयूबाग की भूमि की रजिस्ट्री भी मो.इरफान अंसारी के आदार्यपूर्ण सहयोग (मैत्री) का नायाब नमूना है। इस स्थान का मालिकाना हक भी मो.इरफान अंसारी का था, जिनसे वेदभाष्य स्मारक की

(शेष पृष्ठ ८ पर...)

विनय पीयूष

वेद-वचन

**एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही।
पक्वा शाखा न दाशुषे।।**

(ऋग्वेद १/७/८)

हैं वेद-वचन ऐसे, जैसे
मीठे फल पक्की डाली के!

रसना को करते धन्य,
मोद मन में भरते;
करते आत्मा को तृप्त,
बुद्धि विकसित करते;

चखने वाले चखते जाते
गुण गाते प्रभु की वाणी के!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

चक्रव्यूह या शकटव्यूह?

पहले तो शाहीन बाग को एक 'संयोग' कहा गया- किन्तु मोदी जी ने शाहीन बाग की प्रकृति को पहचाना और इसे 'प्रयोग' कहना ज्यादा उपयुक्त समझा। लेकिन थोड़े दिनों बाद यह सिद्ध हो गया कि शाहीन बाग- न संयोग है और न प्रयोग बल्कि यह नवयुग के द्रोणाचार्य द्वारा बड़ी सजगता, कुशलता एवं चातुर्यपूर्वक बनाया गया विकट शकटव्यूह है। शकटव्यूह की रचना के संबन्ध में 'जयद्रथ वध' खण्डकाव्य के प्रणेता मैथिलीशरण गुप्त जी ने लिखा है-

था विकट शकट व्यूह, सम्मुख द्रोण का कोसों अड़ा।
घन कण्टकित वन तुल्य, जिसका भेदना दुष्कर बड़ा।।
पीछे जयद्रथ को छिपा, छः नायकों के साथ में।
आचार्य ही थे द्वार रक्षक, शस्त्र लेकर हाथ में।।

दिल्ली विधान सभा चुनावों तक यह चक्रव्यूह था, और चुनावों के बाद यह शकटव्यूह बना। शाहीन बाग की संरचना को 'शकट व्यूह' का नाम इसलिए देना पड़ता है क्योंकि शकट- व्यूह का ही अति प्रारंभिक रूप है- चक्रव्यूह। जिस चक्रव्यूह ने अभिमन्यु जैसे नवांकुरित योद्धा की असमय ही में बलि ले ली, दिल्ली सरकार दिल्ली विधान सभा चुनावों में विजय हेतु बनाये गये चक्रव्यूह ने भी पाण्डव पक्ष के एक उत्साही युवा योद्धा की बलि ले ली। मनोज तिवारी- जो फिल्मी गायकी से उभर कर राजनीति के मैदान में आये थे- अभी अपरिपक्व थे, गाने-अभिनय के अलावा राजनीति के पारे के उतार चढ़ाव का उनको ज्यादा अनुभव नहीं था। मनोज तिवारी को आशा थी कि उन्हें द्रोणाचार्य के मुकाबले भाजपा दिल्ली के मुख्यमंत्री पद के रूप में प्रोजेक्ट करेगी किन्तु भाजपा जैसी राजनीति की मंजी हुई पार्टी भला यह कैसे कर सकती थी। किन्तु द्रोणाचार्य से भी दो दो हाथ करने की उमंग रखने वाला यह नवोदित सितारा अभिमन्यु की तरह चुनावी चक्रव्यूह में शत्रुओं से घिर गया। इसके सारे शस्त्र विफल हो चुके थे। अब भी इसके पास एक अमोघ शस्त्र बचा था- वह था हनुमत् भक्ति का। हनुमान जी के परम सेवक श्री मनोज तिवारी से उनका यह शस्त्र भी द्रोणाचार्य ने छीन लिया- वह स्वयं हनुमान जी के उससे भी बड़े भक्त बन बैठे, तिलक लगाया, हनुमान जी के मंदिर में जाकर हनुमान जी को भोग लगाया, दर्शन किया और हनुमान चालीसा का पाठ किया। अभिमन्यु ने कहा- अरे, यह तो पाखण्ड है। सेनापति द्रोणाचार्य तो कभी हनुमान का नाम भी नहीं लेते थे। आज इसमें हनुमान की यह जागी हुई श्रद्धा तो कोरा पाखण्ड है, स्वार्थपरता है। अभिमन्यु ने कहा- अरे, आचार्य द्रोण, तुमने हनुमान जी के सामने जूते तो उतारे लेकिन हाथ तो धोये ही नहीं, अभिमन्यु की इस लचर दलील पर द्रोण जैसे मंजे मंजाये राजनीतिज्ञ ने कहा- अरे, अभिमन्यु तू कितना भोला है, मैंने जूते उतारे लेकिन उनमें हाथ लगाया ही नहीं इसलिए हाथ धोने का प्रश्न ही नहीं उठता। दिल्ली की प्रजा द्रोणाचार्य की बातों पर मुग्ध थी। अभिमन्यु का पराभव हुआ और द्रोणाचार्य को विजयश्री मिल गयी! अब शाहीन बाग कामयाब हो गया था, दिल्ली जल रही थी, शाहीन बाग में बिरयानी की बयार बह रही थी, निजी बैंकों के काउण्टर्स भी खुले हुए थे और सुयोधन अट्टहास कर रहा था। द्रोणाचार्य के अलावा सुयोधन का घमण्ड भी सातवें आसमान पर था- यहाँ तक एक दिन उसने गृहमंत्री को सम्बोधित करते हुए कहा था- अरे, तू देश का गृहमंत्री है या बस कंडक्टर! शाहीनबाग, शाहीन बाग- यही रट लगाये हुए है। गृहमंत्री के लिए इस तरह की अभद्र भाषा भला सुयोधन के अलावा कौन कह सकता था!

अर्थात् दिल्ली चुनावों में सफलता के बाद दिल्ली को बदनाम करने का कार्य अब विधिवत शाहीन बाग से चलने लगा। कोई अमर्यादित राजनेता, जरासंध, शिशुपाल आदि ऐसा नहीं बचा था जो शाहीन बाग नहीं आया हो। पाकिस्तान की जयकार हो रही थी, एक दुरभिमानी नेता कह रहा था- अरे, यह शाहीन बाग है जहाँ बिल्लियाँ नहीं, ये प्रदर्शनकारी तो शेरनियाँ हैं- बर्बाद कर देंगी हिन्दुस्तानी चमन को।

सुयोधन का यह कथन निरर्थक नहीं था। उसने शाहीन बाग के जमावड़े के पहले ही दिन 'सर्जिकल स्ट्राइक' का सुझाव दे दिया था। दुर्योधन चाहता था कि मोदी, शाह सर्जिकल स्ट्राइक के तौर पर कोई एक्शन लें, कुछ प्रदर्शनकारी घायल हों, या मरें और वह शाह की क्रूरता को प्रचारित करके अपनी कामयाबी के झण्डे गाड़ सके। किन्तु राजनीति के अनुभवी शाह ने ऐसी कोई कार्यवाही शाहीनबाग में नहीं की, सर्वदा शालीनता का ही प्रदर्शन किया।

एक मौलाना ने तो अपने को मुहम्मद बिन कासिम की औलाद बता डाला और अठारह करोड़- सौ करोड़ पर भारी- का नारा लगाया। शाहीन बाग अब केवल देशी नहीं था- इसके पीछे विदेशी अर्थतंत्र फंडिंग का काम कर रहा था।

मुझे वह दिन याद है जब पचास वर्ष पूर्व शेख अब्दुल्ला कश्मीर के विलय के मार्ग में बाधक बने थे- तो वे अपने को 'शेरे कश्मीर' कहा करते थे। उस समय लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल ने कहा था- शेख साहब! निश्चय ही आप 'शेरे कश्मीर' हैं, किन्तु याद रखिये, शेरों के रहने की दो ही जगहें होती है-. या वह जंगल की झाड़ियों में रहे या पिंजड़े में। आपको जो पसंद हो वह फरमायें। कश्मीर का भारत में विलय हुआ, शेर पिंजरे में चला गया।

'आपुन तेज संभारहु आपै' के अनुसार पालित पोषित प्रशिक्षित शेरनियों के लिए चाँदी के पिंजरे विजयी द्रोणाचार्य को तैयार करने होंगे, ताकि उनमें शेरनियाँ आराम से रह सकें। यह कार्य गुरुवर द्रोणाचार्य ही कर सकते हैं क्योंकि राजनीति में जो तीक्ष्ण बुद्धि उनके पास है, वह किसी के पास नहीं। उनके असली कार्य कलापों की भनक तक दिल्ली जनता को नहीं लग पाती है- वह बुद्ध-गाँधी की तरह दिल्ली वासियों के पूज्य बने रहते हैं।

वेदप्र० श० शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में दशम समुल्लास का अंश

अथ दशमसमुल्लासारम्भः

अथाऽऽचाराऽनाचारभक्ष्याऽभक्ष्यविषयान् व्याख्यास्यामः

अब जो धर्मयुक्त कामों का आचरण, सुशीलता, सत्पुरुषों का संग और सद्विद्या के ग्रहण में रुचि आदि आचार और इनसे विपरीत अनाचार कहाता है; उसको लिखते हैं-

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः।
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तन्निबोधत॥

(मनु. अध्याय 2)

मनुष्यों को सदा इस बात पर ध्यान रखना चाहिये कि जिसका सेवन रागद्वेष रहित विद्वान् लोग नित्य करें; जिसको हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जानें, वही धर्म माननीय और करणीय है।।1।।

कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकामता।
काम्यो हि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥

क्योंकि इस संसार में अत्यंत कामात्मता और निष्कामता श्रेष्ठ नहीं है। वेदार्थज्ञान और वेदोक्त कर्म ये सब कामना ही से सिद्ध होते हैं।।2।।

संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः।
व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥

आचार-अनाचार

जो कोई कहे कि मैं निरच्छ और निष्काम हूँ वा हो जाऊँ तो वह कभी नहीं हो सकता क्योंकि सब काम अर्थात् यज्ञ, सत्यभाषणादि व्रत, यम नियमरूपी

धर्म आदि संकल्प ही से बनते हैं।।3।।

अकामस्य क्रिया काचिद् दृश्यते नेह कर्हिचित्।
यद्यद्धि कुरुते किंचित् तत्तत्कामस्य चेष्टितम्॥

क्योंकि जो-जो हस्त, पाद, नेत्र, मन आदि चलाये जाते हैं वे सब कामना से ही चलते हैं। जो इच्छा न हो तो आंख का खोलना और मींचना भी नहीं हो सकता।।4।।

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्।
आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च॥

इसलिये सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्पुरुषों का आचार और जिस-जिस कर्म में अपना आत्मा प्रसन्न रहे अर्थात् भय, शंका; लज्जा जिसमें न हो उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो! जब कोई मिथ्याभाषण, चोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है इसलिये वह कर्म करने योग्य नहीं।।5।।

सर्वन्तु समवेक्ष्येदं निखिलं ज्ञानचक्षुषा।
श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान् स्वधर्मे निविशेत वै॥

मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्पुरुषों का आचार, अपने आत्मा के अविरुद्ध अच्छे प्रकार विचार कर ज्ञाननेत्र करके श्रुति प्रमाण से स्वात्मानुकूल धर्म में प्रवेश करे।।6।।

श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम्॥

क्योंकि जो मनुष्य वेदोक्त धर्म और जो वेद से अविरुद्ध स्मृत्युक्त धर्म का अनुष्टान करता है वह इस लोक में कीर्ति और मरके सर्वोत्तम सुख का प्राप्त होता है।।7।।

(क्रमशः)

वेदांजलि

क्रान्तदर्शी ही कालरूपी घोड़े पर चढ़ सकते हैं

□पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।

-अथर्व 19/53/1

शब्दार्थ-

(सप्तरश्मिः) सात रस्सियों वाला (सहस्त्राक्षः) हजारों धुरों को चलाने वाला (अजरः) कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होनेवाला (भूरिरेताः) महाबली (कालः अश्वः) समयरूपी घोड़ा (वहति) चल रहा है- संसार-रथ को खींच रहा है। (विश्वा भुवनानि) सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन (तस्य) उसके (चक्राः) उसके द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। (तम्) उस घोड़े पर (विपश्चितः) ज्ञानी और (कवयः) क्रान्तदर्शी लोग ही (आरोहन्ति) सवार होते हैं।

व्याख्या-

मंत्र में मुख्य रूप से दो बातें कही गई हैं- पहली यह कि सम्पूर्ण भुवनचक्र को घुमानेवाला महाबली और कभी वृद्ध होकर मन्दगति न होनेवाला समयरूपी घोड़ा पूरे वेग से दौड़ रहा है। दूसरी यह कि इस महाबली और वेगवान् कालरूपी घोड़े पर ज्ञानी और दूरदर्शी लोग ही सवार होकर अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं, अल्पसामर्थ्य और अदूरदर्शी नहीं। इस मंत्र में सफलतापूर्वक जीने का रहस्य बताया गया है। जो संसार में जातियों और राष्ट्रों के उत्थान और पतन के लम्बे इतिहास पर गुण-दोषों का विवेचन करके चलते हैं, वहीं इस घोड़े पर सवार होते हैं। ऐसे लोग वर्तमान में सुख-सुविधा प्राप्त करते हुए अपने भविष्य का निर्माण करते हैं यही बात प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने इन शब्दों में लिखी है-

"Nations live on their past, in their present, for their future."

'जातियाँ भूत के आधार पर वर्तमान में भविष्य के लिए जीती हैं।'

वेद ने कालरूपी घोड़े के योग्य सवार बनने के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम ज्ञानी बनने का-'**भानुमन्विहि**'(ऋ.) परामर्श दिया है, संयम और तप का उपदेश दिया है-'**ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत**' (अथर्व.), '**तेन त्यक्तेन भुंजीथाः**'(यजु.) कहकर त्यागभाव से संसार को भोगने का उपदेश दिया है। ये सभी उपदेश मनुष्य को सोच समझ कर मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए दिये गए हैं। समाज में इस वायुमण्डल के तैयार होने पर वही दृश्य उपस्थित हो जाएगा, जिसकी झाँकी महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या का वर्णन करते हुए की है।

राम ने राजतिलक की तैयारी होते होते अप्रत्याशित रूप से उपस्थित वनवास के प्रस्ताव को सहज भाव से अंगीकार किया। इसके मार्ग में बाधक बननेवाले लक्ष्मण को भी बड़े चातुर्य से शान्त किया। इन सभी आचरणों से राम की दूरदर्शिता और व्यवहार-कौशल का पता चलता है।

उधर ननसाल लौटने पर भरत ने परिस्थिति का अध्ययन करके अपने राज्याधिकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और राम को वापस लाने के लिए मंत्रिमण्डल, अयोध्या के चुनिंदा लोगों और तीनों माताओं को साथ लेकर प्रस्थान किया।

राम ने अनेक युक्ति-प्रतियुक्तियों के पश्चात् कहा कि जो पिता अपने वचन का पालन करने के लिए इस संसार से चला गया, उसका पुत्र मैं यदि 14 वर्ष बिना पूरे किये लौट जाऊँ तो '**कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम्**'-तो संसार के पिता अपने पुत्रों से यह आशा कैसे कर सकेंगे कि उनके पुत्र आगे संसार में उनकी लीक पर चलकर उनके प्रण निभाएँ?

इस सारे कथा-प्रसंग के उद्धृत करने का यही उद्देश्य है कि भरत और राम दोनों का दृष्टिकोण दूरदर्शिता और औदार्य से पूर्ण था। परिणामस्वरूप कुत्सित स्वार्थ और संकीर्ण दृष्टि से जो कटुता उत्पन्न हुई थी, उसका भी पर्यवसान स्नेह और आत्मीयता में हो गया। भारत के इतिहास में भरत और राम ने परम ख्याति अर्जित की और हमारे मानसभवनों में वे आज भी जीवित-जागृत हैं, अमर हैं। इसी को कहते हैं समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

कृष्ण ने अपनी प्रबल नीति से अपने चिर-वैरी और अतिबली शत्रु को उसके घर में घुसकर बिना सैनिक-क्षति किये हुए समाप्त कर दिया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहयोग के लिए सैकड़ों राजा जुटा दिये। इस सूझबूझ के साथ संसार में चलने को ही कहते हैं-समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने जो प्रशस्ति पत्र कृष्ण को दिया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। महर्षि ने लिखा है कि-'महाभारत में वर्णित कृष्ण के चरित्र को देखने से विदित होता है कि इस महापुरुष ने यावज्जीवन कोई पाप नहीं किया।'

अतएव मंत्र में कहा गया है कि- '**तमारोहन्ति कवयो विपश्चितः**'-इस कालरूपी अश्व पर सवारी करने का अधिकार विद्वान् और क्रान्तदर्शियों को ही है।

अतः प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सावधान होकर दूरदर्शिता से देश के गौरव और सम्मान की सुरक्षा के लिए तुच्छ स्वार्थों की आहुति देनी चाहिए और अच्छे संयमी और तपस्वी व्यक्तियों के हाथ में ही देश का भविष्य सौंपना चाहिए। अन्यथा जो परिणाम होगा, वह एक उर्दू शायर के शब्दों में पढ़िये-

मैं ही रुका न वक्त की रफ़्तार देखकर,
कहता रहा वो मुझसे ख़बरदार! देखकर।
यूँ पढ़के उसने एक तरफ रख दिया मुझे,
जिस तरह फेंक दे कोई अख़बार देखकर।।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द २८-३०

पुरोहितानुष्ठितशंकरार्चनम्,
उपासकैरर्पितदीपभासितम्।
फलादिनैवेद्यसुपूरितं तथा,
सुगन्धधूपान्वितवायुमण्डलम्।।

पुरोहितों द्वारा की गई शंकर की अर्चना से युक्त, -उपासकों द्वारा अर्पित दीपकों से भासित, फलादि नैवेद्य से अच्छी प्रकार पूरित तथा सुगन्धित धूप से युक्त वायुमंडल वाले (शिवालय को मूलशंकर ने देखा)

मयोभुवं क्षेमकरं महेश्वरम्,
अनन्यभावेन विचिन्तयन् हृदा।
अजागरीत् शंकरमूर्तिसम्मुखम्,
स आशुतोषस्य दयाभिलाषुकः।।

सुखदायक तथा कल्याणकारी महेश्वर का अपने हृदय द्वारा अनन्यभाव से चिन्तन करते हुए- आशुतोष अर्थात् शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाले भगवान् शिव की दया का अभिलाषी वह मूलशंकर शंकर की मूर्ति के सम्मुख रातभर जागता रहा।

विधाय पूजां प्रहरद्वयस्य तु,
प्रसह्य निद्रावशमागताः समे।
विवेकहीना हि जना यथा द्रुतम्,
भवन्त्यहो मोहतमोनिवेष्टिताः।।

दो प्रहरों की पूजा करके सभी बरबस उसी प्रकार निद्रा के वशीभूत हो गए जिस प्रकार विवेकहीन व्यक्ति शीघ्र ही मोहरूपी अन्धकार से आच्छादित हो जाते हैं।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

स्मृति-वातायन

'रामजी' से 'आर्यभिक्षु' बनने की अन्तर्कथा

-डॉ० वेद प्रकाश आर्य-

गतांक का शेष....

श्री भगवत् शरण एक सुयोग्य उत्साही नवयुवक उन दिनों 'आर्य मित्र' के सम्पादक नियुक्त हुए थे (१९५७)। दिन प्रतिदिन 'आर्य मित्र' को इतना समुन्नत और सुंदर तथा व्यवस्थित उन्होंने बना दिया था कि 'आर्य मित्र' किसी भी हिन्दी साप्ताहिक को टक्कर देने में समर्थ था। आर्य प्रतिनिधि सभा, मीराबाई मार्ग, लखनऊ श्री रामजी प्रसाद गुप्त के कुशल निर्देशन में अपनी दुर्बलताओं पर विजय प्राप्त कर आगे बढ़ रही थी। प्रदेश में आर्य वीर दल की शाखाएँ लगने लगीं थीं और आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग सुंदर आकर्षक रूप लेने लगे थे क्योंकि राम जी प्रसाद गुप्त समय की पाबंदी पर बहुत ध्यान रखते थे और पदाधिकारियों की सत्संग में उपस्थिति अनिवार्य समझते थे। ऐसे लगने लगा कि अब आर्य समाज के अच्छे दिन आ गये हैं किन्तु तभी अचानक एक दिन समाचार मिला की गुप्त जी को आर्य प्रतिनिधि सभा से निष्कासित कर दिया गया। उस समय वे प्रतिनिधि सभा के मंत्री और प्रधान की यह कार्यवाही हतप्रभ करने वाली थी। गुप्त जी लखनऊ छोड़कर मुगलसराय चले गये।

उन्हीं दिनों श्री प्रकाश वीर शास्त्री, ओम प्रकाश पुरुषार्थी, लाला रामगोपाल शालवाले, पंडित नरेन्द्र जी का नेतृत्व देश में हलचल मचा रहा था। पंजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह का विगुल बज गया था। जगह जगह से सत्याग्रहियों के जत्थे पंजाब की ओर प्रस्थान कर रहे थे। भगवत् शरण जी के प्रयत्नों से लखनऊ में भी हिन्दी रक्षा समिति तथा विद्यार्थी हिन्दी रक्षा समिति बनी। आन्दोलन का वातावरण भगवत् शरण जी ने लखनऊ में भी बनाया किन्तु सत्याग्रह हेतु कारागार जाने वाला एक भी सत्याग्रही सामने नहीं आया था। तभी समाचार पत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि पूर्वी उ.प्र. से आर्य वीर दल का एक बहुत बड़ जत्था लेकर श्री रामजी प्रसाद गुप्त सत्याग्रह करने हेतु जा रहे हैं। जगह जगह इस जत्थे का भव्य स्वागत हुआ। इस जत्थे ने सफलतापूर्वक आर्य समाज के नेतृत्व में संचालित इस भाषा स्वातंत्र्य आन्दोलन में भाग लिया, सत्याग्रह किया, कारागार में अपना डेरा जमाया। गुप्त जी के त्याग और साहस की आर्य जगत में धूम मची। आर्य नवयुवक उनके नेतृत्व के दीवाने थे। जब कई महीने बाद यह आन्दोलन समाप्त हुआ तो आन्दोलन के अखिल भारतीय नेताओं का जो कैलेन्डर प्रकाशित हुआ- उसमें आर्य समाज के दिग्गज नेताओं की पंक्ति में एक चित्र ऐसा भी था, जिसके नीचे अंकित था- श्री रामजी प्रसाद गुप्त, मुगलसराय।

उस समय भी मैं गुप्त जी के सन्निकट ही था क्योंकि लखनऊ से एकमात्र मैं ही एक ऐसा था जिसने सत्याग्रह में भाग लिया तथा पंजाब की रोहतक जेल में रहकर आर्य समाज के यश गौरव की पताका फहराई थी। गुप्त जी मुझे भला कैसे भूल सकते थे। हिन्दी आन्दोलन की समाप्ति के बाद भी गुप्त जी ने जीवन में फिर कभी आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर रुख नहीं किया। वे बड़े दृढ़ प्रतिज्ञ थे। १९५८ से १९६१ तक मैं विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई पूरी करने लगा। एम.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्राप्त करने के बाद मेरी नियुक्ति डी.ए.वी. इन्टर कालेज, आजमगढ़ में ससम्मान हुई। जाते ही वहाँ आर्य समाज के मंत्री पद का दायित्व भी मुझे सौंप दिया गया- श्री अक्षयवर नाथ आर्य 'मंत्री जी' का मैं स्नेहपात्र था। आजमगढ़ आर्य समाज का उत्सव अत्यंत विशाल और भव्य होता था। प्रकाश वीर शास्त्री एम.पी. बन चुके थे और उनके व्याख्यान सुनने के लिए हजारों की भीड़ लालायित रहती थी। उस वर्ष १९६१-६२ आर्य समाज आजमगढ़ के उत्सव में जो विद्वान् आये उनमें एक नाम 'आर्यभिक्षु' का भी था। पता चला श्री रामजी प्रसाद गुपत अब 'आर्यभिक्षु' बन चुके हैं। मुझे वे पूर्ववत् बड़े स्नेह के साथ मिले। उन दिनों आर्यभिक्षु जी सफेद खादी की लुंगी और एक सफेद खादी की चादर ओढ़ते थे। उनकी काया बलिष्ठ हो चुकी थी। दाढ़ी तो और भव्य थ। पैरों में उन दिनों खड़ाऊँ पहनते थे। व्याख्यान माला का आकर्षण तो गजब का था। हिन्दी, उर्दू, अंग्रजी- तीनों भाषाओं में वे धाराप्रवाह बोलते थे। लोगों को हँसाना, रुलाना उनके बायें हाथ का काम था। उनका व्याख्यान सुनने के लिए जनसमूह समुत्सुक रहता था। मेरे संयोजकत्व में उस वर्ष उत्सव में आर्यभिक्षु जी के कई व्याख्यान हुए। आमतौर से पंडित प्रकाश वीर शास्त्री जैसे वाणी के जादूगर के बाद जनता अन्य किसी का व्याख्यान सुनने हेतु रुकती नहीं थी किन्तु यह कैसा चमत्कार था, शास्त्री जी के व्याख्यान के बाद भी जनता आर्यभिक्षु की वाणी सुनने को शान्तचित्त बैठी रही। मैंने श्रद्धा से अभिभूत होकर आर्यभिक्षु जी के नाम से पूर्व 'महात्मा' शब्द प्रयोग किया। 'आर्यभिक्षु' से पूर्व 'महात्मा' शब्द इतना सटीक था, कि सम्पूर्ण आर्य जगत में 'महात्मा आर्यभिक्षु' के रूप में विख्यात हुए। *(शेष फिर कभी)*

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा-1 :

यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण की किस शैली का अनुसरण करना चाहिए?

-प्रत्यूष रत्न पाण्डेय, प्रधान, आर्य समाज, लाजपतनगर, चौक, लखनऊ

समाधान :

यज्ञ में वेदमंत्रों की उच्चारण शैली क्या हो- इसका उत्तर जानने के लिए दो बातों का ध्यान रखना लाजिमी है :

(1) आर्य समाज की पूर्व परम्परा

(2) महर्षि का मन्तव्य

दोनों पर गौर करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आर्य समाज के द्वारा प्रवर्तित यज्ञ प्रचारात्मक होना चाहिए अर्थात् ऐसी शैली ग्रहण करनी चाहिए, जो सभी को आकर्षित करे- वेदमंत्रों की ग्राह्यता में अभिवृद्धि हो, अधिक से अधिक लोग वैदिक यज्ञों को करने की ओर प्रवृत्त हों। आर्य समाज का प्राचीन इतिहास भी यही बताता है। अतः वेदमंत्रों के उच्चारण में मध्यभाग या मध्यमार्ग ही सर्वश्रेष्ठ है। मुझे याद है, मेरे बाल्यकाल में जब मेरे (ग्राम गोनी, जिला हरदोई) में यज्ञ होता था, तो हमारे आर्य समाज के एक सदस्य थे श्री छोटेलाल हलवाई, जिन्होंने हमलोग बाबा कहते थे। वे निरक्षर थे किन्तु मंत्रों का उच्चारण इतना सुंदर करते थे कि आज भी उनकी मुखाकृति आँखों के समक्ष उपस्थित हो जाती है।

महर्षि ने संस्कार विधि में इस संबन्ध में जो मार्गदर्शन किया है, वह ध्यान देने योग्य है। मंत्रों का उच्चारण मात्र आचार्य को नहीं करना है, वरन् इस तरह करना है कि यजमान और उसका परिवार भी बोल सके। ऋषिवर का स्पष्ट निर्देश है कि यज्ञ में मंत्रों को उच्चारण मधुर स्वरों में करे। न शीघ्र न विलम्ब से किन्तु मध्यमार्ग- जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, करे। यहाँ ऋषि के मन्तव्य पर और शब्दों पर ध्यान देना जरूरी है। जैसा जिस वेद का उच्चारण है किन्तु उसमें भी मध्यमार्ग पर ऋषि ने विशेष बल दिया है। ऐसा मध्यभाग अर्थात् मध्य मार्ग या समन्वित शैली आर्य विद्वानों ने निकाली थी और सभी मिलजुल कर पाठ कर लेते थे। यदि आचार्य ही सभी मंत्रों का अपनी अपनी एकेडेमिक शैली में पाठ करके चला गया तो यजमान और उसके परिवार को क्या मिला?

आर्य समाज की पूर्व परम्परा में ऐसी ही शैली प्रचलित थी। प्रत्येक मंत्र के आरंभ में 'ओम्' और अन्त में 'स्वाहा' स्वर वातावरण को श्रद्धामय, भक्तिमय, शान्तिमय बना दिता था। जहाँ यज्ञ होता था, वह क्षेत्र धन्य हो जाता था, सनाथ कृतकृत्य हो जाता था। यह तभी सम्भव है जब ऋषिवर के मन्तव्य और आर्य समाज की पूर्व परम्परा को ध्यान में रखकर ऋषि के शब्दों को याद कर लें- 'मधुर स्वर' और मध्य मार्ग तो आर्य समाज के यज्ञों को अर्थानुसन्धान के स्थान पर श्रद्धानुसन्धान के योग्य बना सकेंगे।

जिज्ञासा-2 :

'लोक' कितने होते हैं और उनके क्या नाम हैं? कृपया अवगत करायें।

-पात प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

समाधान :

स्थूल रूप से यदि कहा जाय तो लोक तीन हैं- स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक और पाताल लोक। अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार 'लोक' चौदह हैं; पृथ्वी से आरम्भ करके-

ऊपर की ओर क्रमशः	नीचे की ओर क्रमशः
भूः लोक	अतल
भुवः लोक	वितल
स्वः लोक	सतल
महः लोक	रसातल
जनः लोक	तलातल
तपः लोक	महातल
सत्य लोक (ब्रह्मलोक)	पाताल

एक दूसरे के ऊपर अर्थात् भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्य या ब्रह्मलोक, तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक-दूसरे के नीचे-अर्थात् अतल, वितल, सतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

(सन्दर्भ ग्रंथ-'संस्कृत हिन्दी शब्दकोश'-वामन शिवराम आप्टे)

विशेषः-

विश्व के एक प्रभाग को 'लोक' कहते हैं। लोक का ही समानार्थक शब्द है 'भुवन'।

1- 'वेद भुवनानि विश्वा'

(यजुर्वेद, 32/10)

(वह परमात्मा सम्पूर्ण लोकमात्र-नाम, स्थान और जन्मों को जानता है।)

2- चौदह भुवन जे
तर उपराहीं,
ते सब मानुस
के घट माहीं।।

(मलिक मोहम्मद जायसी-'पद्मावत' में)

सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी 'पद्मावत' में लिखते हैं कि जो दृश्यमान जगत में नीचे और ऊपर चौदह भुवन है- वे सभी मनुष्य के घट के अन्दर हैं।

3- वेदना विकल
फिर आई,
मेरी चौदहों
भुवन में।
सुख पड़ा न
कहीं दिखाई,
विश्राम कहाँ
जीवन में।।

(जयशंकर 'प्रसाद'-'आँसू' काव्य में)

-प्रधान समादक

जन जागृति का जनक - विश्व साहित्य की अनुपम ग्रंथ है

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका

—आचार्य राजवीर शास्त्री—

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' वेदार्थ-बोध के लिए एक अनुपम ग्रन्थ है। महर्षि ने अपने वेद-भाष्य को ठीक-ठीक समझने और समझाने के लिए ही इसकी रचना की। वेदार्थ के पाठक इसके बिना महर्षि के वेद-भाष्य को समझ नहीं सकते। स्वयं महर्षि भूमिका का प्रयोजन बताते हुए वेद-भाष्य के विज्ञापन में लिखते हैं-

(१) 'जब भूमिका छप के सज्जनों के दृष्टिगोचर होगी, तब वेद-शास्त्र का महत्त्व जो बड़प्पन तथा सत्यपना भी सब मनुष्यों को यथावत् विदित हो जायेगा।'

(पत्र और विज्ञापन, पृ.३६ पर)

(२) *'जो कोई भूमिका के बिना केवल वेद ही लिया चाहे, सो नहीं मिल सकते।'*

(पत्र और विज्ञापन, पृ.१३८ पर)

(३) 'और यह भी जानना चाहिए कि चारों वेद की भूमिका एक ही है।'(पत्र और विज्ञापन, पृ.८७ पर)

(४) 'भूमिका चारों वेदों की एक ही है।'(पत्र और विज्ञापन, पृ.८६ पर)

उपर्युक्त उद्धरणों से जहाँ भूमिका का प्रयोजन स्पष्ट होता है, वहाँ इस भ्रम का भी स्वामी जी के लेख से ही निराकरण हो जाता है कि यह भूमिका वेदादि सब शास्त्रों की है किन्तु चारों वेदों के भाष्य की है। जैसे मकान बनाने से पूर्व नक्शे की आवश्यकता होती है, वैसे ही प्रत्येक वेद भाष्यकार प्रथम वेद भाष्य की भूमिका में अपनी मान्यताओं का स्पष्टीकरण करता है। अतः भूमिका के बिना महर्षि के वेद भाष्य को समझना अत्यन्त दुरूह कार्य है। महर्षि ने इसलिए भूमिका के बिना वेदभाष्य देने से मना किया था। परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य ही रहा कि जो आर्य बन्धु तथा सभाएँ महर्षि के आदेशों की अवहेलना करके बिना भूमिका के वेदभाष्य छापती रही हैं। सायणादि भाष्यों के साथ उनकी भूमिकाएँ छपी मिलती हैं। **हमें इस बात से बहुत ही हार्दिक हर्ष हो रहा है कि 'आर्ष सहित्य प्रचार ट्रस्ट' ने महर्षि के आदेश का पालन करते हुए उनके वेद भाष्य को यथार्थ में हृदयंगम कराने के लिए वेदभाष्य के साथ भूमिका को छपवाने का प्रबन्ध किया है। क्योंकि लेखक की मूलभूत वैदिक मान्यताओं को समझने के लिए उसकी भूमिका का अध्ययन करना परमावश्यक होता है।**

इस विस्तृत भूमिका के बनाने का महर्षि का यह भी प्रयोजन था कि वेद-विषयक जो भी पौराणिक मिथ्या मान्यताएँ फैली हुई हैं, जिनके कारण पाश्चात्य विद्वानों को ही नहीं, अपितु कतिपय भारतीय विद्वानों को भी वेदों के विषय में मिथ्या-भ्रम हो गया है। जिससे वेदों का गौरव ही कम नहीं हुआ, किन्तु 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' है, अथवा ईश्वरप्रोक्त हैं, इसमें भी लोगों को भ्रान्ति हो गई। महर्षि दयानन्द की इस भूमिका से जहाँ मिथ्या-मतों की पोल खुली है, वहाँ सत्यार्थ का प्रकाश होने से सत्यासत्य का निर्णय भी पाठक कर सकते हैं।

यद्यपि सायणादि वेद-भाष्यकारों ने भी अपनी-अपनी भूमिकाएँ बनाई हैं, परन्तु उनमें प्रथम तो आवश्यक मान्यताओं का वर्णन ही नहीं मिलता है और जिनका मिलता है उनमें अनेक गलत हैं और जो ठीक है उनको उन्होंने स्वयं वेदभाष्य में पालन नहीं किया है। जैसे वर्तमान में आचार्य सायण का वेदभाष्य अधिकतर पठन-पाठन में दृष्टिगोचर होता है, उन्होंने मंत्रों के प्रतिपाद्य-विषय मुख्य देवता के विषय में *ही मौन-धारण कर लिया है।* देवतार्थ को बिना समझे कैसे मन्त्रार्थ की संगति हो सकती है? अतएव वेदार्थ का पाठक सायण-भाष्य से सन्देह में ही पड़ा रहता है कि सायण क्या कहना चाहते हैं। ऐसे ही वेदों को ईश्वर-प्रोक्त (अपौरुषेय) मानकर भी वेदों में अनित्य इतिहास मानना, इन्द्रादि देवों को ईश्वर-तुल्य समझना, स्वर्ग-नरक लोकविशेषों की कल्पना तथा ईश्वर के साकारवाद को मानकर जड़-पूजा का मानना आदि अनेक सायण की मिथ्या मान्यताएँ उनके भाष्य में मिलती हैं।

ऋषि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में उस प्राचीन ऋषियों की मन्त्रार्थ शैली को अपनाया है, जिससे मिथ्यामतों का खण्डन स्वतः ही हो जाता है। महर्षि अपने वेदभाष्य की शैली का स्पष्टीकरण करते हुए भूमिका के अन्त में लिखते हैं-

मन्त्रार्थभूमिका ह्यत्र मन्त्रस्तस्य पदानि च। पदार्थान्वयभावार्थाः क्रमाद् बोध्या विचक्षणैः।।

अर्थात् इस मन्त्र-भाष्य में इस प्रकार का क्रम रहेगा कि मन्त्रार्थभूमिका=प्रथम तो मन्त्र में परमेश्वर ने जिस बात का प्रकाश किया है। फिर मूलमन्त्र। उसका पदच्छेद। क्रम से प्रमाण-सहित मन्त्र के पदों का अर्थ। अन्वय अर्थात् पदों की सम्बन्धपूर्वक योजना और छठा भावार्थ अर्थात् मन्त्र का जो मुख्य प्रयोजन है। इस क्रम से मन्त्र-भाष्य बनाया जाता है।

वेद-भाष्य की इस शैली से कोई भी विद्वान् वेदों में इतिहासादि मिथ्यामतों की सिद्धि नहीं कर सकता। यह महर्षि की स्पष्ट योजना तथा प्राचीन ऋषियों की परम्परा है। भाष्य का लक्षण भी यही है- **नामूलं लिख्यते किंचित्। नानपेक्षितमुच्यते।** अर्थात् जो मूल में नहीं है और जिसकी आवश्यकता भी नहीं है, उस बात को भाष्य में नहीं रखना चाहिए। महर्षि ने इस बात का विशेष ध्यान रक्खा है। परन्तु सायणादि ने इस प्राचीन शैली को न अपना कर, स्थान-स्थान पर कल्पनाओं का आश्रय करके मिथ्या पौराणिक मान्यताओं को जन्म दिया है। यदि वे मन्त्र के देवतार्थ पर विचार करके प्रकरणानुसार मन्त्रों के पदों का ही अर्थ करके भाष्य करते, तो वे कदापि मिथ्यामतों को अपने भाष्य में नहीं दिखला सकते थे। उनके वेद-भाष्य के अनर्थ का मूल कारण जहाँ प्रचीन शैली को छोड़ना है, वहाँ यह भी कारण हुआ कि वे वेद-भाष्य के अधिकारी भी नहीं थे। निरुक्त के अनुसार वेद-भाष्य करने का अधिकार किसको है? यह स्पष्ट करते हुए लिखा है-

न ह्येषु प्रत्यक्षमस्त्यनृषेरतपसो वा। (निरुक्त 13/12)

अर्थात् जो मन्त्रार्थ के साक्षात्कर्त्ता ऋषि नहीं हैं, अथवा जो अतपस्वी अर्थात् मलीन अन्तःकरण वाले हैं, उन्हें वेदार्थ करने का अधिकार नहीं है। महर्षि दयानन्द भी लिखते हैं-

"(प्रश्न) वेद संस्कृत में प्रकाशित हुए और अग्नि आदि ऋषि लोग उस संस्कृत भाषा को नहीं जानते थे, फिर वेदों का

अर्थ उन्होंने कैसे जाना?

(उत्तर) परमेश्वर ने जनाया। और धर्मात्मा महर्षि योगी लोग जब-जब जिस जिस के अर्थ की जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए, तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाए।" (सत्यार्थ प्रकाश,स.समु.)

ऋषि के इन वचनों से स्पष्ट है कि ईश्वर की समाधि में जो ध्यानावस्थित नहीं हुए हैं, उनका अन्तःकरण मलीन होने से वे मन्त्रार्थ को कदापि साक्षात् नहीं कर सकते। मनुष्यकृत और ऋषिकृत वेद-भाष्यों में यही महान् मौलिक अन्तर है। मनुष्य अपनी अपूर्ण विद्या के कारण शब्दार्थ की प्रकरणानुसार संगति नहीं लगा सकते। केवल पाण्डित्य के कारण शब्दार्थ ही कर सकते हैं और वह भी असंगत। क्योंकि शब्दों के अनेकार्थक होने के कारण प्रकरणविरुद्ध अर्थ कैसे संगत हो सकता है?

सायणादि पौराणिक भाष्यकारों के भाष्य इसलिए भी अनर्थ करने वाले हुए कि उन्होंने प्राचीन ऋषि-भाष्य निरुक्तादि के सिद्धान्तों को भी छोड़ दिया है। निरुक्त सम्मत वैदिक-पद आख्यातज होते हैं, परन्तु सायण-भाष्य में रूढ़ अर्थ भी किए हैं। वैदिक कोष निघण्टु ब्राह्मण आदि का आश्रय न करके लौकिक अर्वाचीन अमरकोषादि का भी सायणादि ने स्पष्ट आश्रय लिया है।

सायणादि की ऋषि-सम्बन्धी मान्यता भी भ्रान्तिपूर्ण है। मन्त्रों के आरम्भ में उल्लिखित ऋषियों को ऐतिहासिक न मानकर मन्त्रार्थ में सहायक मानना, अथवा वेदों को अपौरुषेय मानकर भी मन्त्रान्तर्गत पठित वसिष्ठादि को व्यक्ति विशेष मानकर मन्त्रार्थ करना इत्यादि परस्पर विरुद्ध मान्यताएँ सायणादि भाष्यों में स्पष्ट उल्लिखित मिलती हैं। महर्षि दयानन्द ने इन वेद-भाष्यकारों की मौलिक त्रुटियों को बहुत ही गम्भीरता से समझा और वैदिक स्वस्थ्य मान्यताओं को पुनः प्रसारण हेतु वेदार्थ का प्रकाश किया। महर्षि लिखते हैं-"यह भाष्य प्राचीन आचार्यों के भाष्य के अनुकूल बनाया जाता है। **परन्तु जो रावण, उव्वट, सायण और महीधर आदि** *ने भाष्य बनाए हैं, ये सब मूलमन्त्र और ऋषिकृत व्याख्यानों के विरुद्ध* **हैं। मैं वैसा भाष्य नहीं बनाता। क्योंकि उन्होंने वेदों की सत्यार्थता और अपूर्वता कुछ भी नहीं जानी। और जो मेरा भाष्य बनता है, वह तो वेद, वेदांग, ऐतरेय, शतपथ ब्राह्मण आदि ग्रन्थों के अनुसार है। क्योंकि जो-जो वेदों के सनातन व्याख्यान हैं, उनके प्रमाणों से युक्त बनाया जाता है। यही इसमें अपूर्वता है।"**

(ऋ.भा.भू., भाष्यकरणशंका.)

महर्षि के इस लेख से जहाँ महर्षि के भाष्य की अपूर्वता का बोध हो रहा है, वहाँ उन विद्वानों की भ्रान्ति का भी निराकरण हो जाता है, जो यह मिथ्या मान्यता बनाए हुए हैं कि सायण-भाष्य भी ठीक है और महर्षि दयानन्द का भाष्य भी ठीक है। यदि सायण-भाष्य में कर्मकाण्डपरक अर्थ भी संगत होता तो महर्षि ऐसा कदापि नहीं लिखते। महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद-भाष्य में तो प्रारम्भ के २१ सूक्तों के अन्त में निरन्तर सायणादि भाष्यों को मिथ्या-भाष्य बताया है। इस विषय में 'दयानन्द-संदेश' का 'वेदार्थसमीक्षांक' द्रष्टव्य है। जिसमें मैंने सायण-भाष्य के प्रमुख दोषों का दिग्दर्शन सप्रमाण दिखाया है। और ऋग्वेद के प्रथम २१ सूक्तों में सायाण भाष्य का प्रकरण-विरोध, शास्त्र विरोध तथा अर्थों की असंगति का स्पष्ट उल्लेख किया है।

महर्षि दयानन्द का ही वेद भाष्य क्यों पढ़े?

महर्षि दयानन्द ने अपने वेद भाष्य के सम्बन्ध में अनेक स्थानों पर इस प्रकार लिखा है-

(क) 'जब मेरा वेद भाष्य पूर्ण हो जायेगा, तो यह पूर्णतया सिद्ध हो जायेगा कि मेरे सिद्धान्त वेदानुकूल हैं।'

(भ्रान्तिनिवारण, पृ.३)

(ख) 'मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष को नहीं देखता, और उन्हीं पर मेरे सिद्धान्त वेदानुकूल हैं।'

(भ्रान्तिनिवारण, पृ.४)

(ग) 'परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला कि वेद भाष्य पूर्ण

आचार्य राजवीर शास्त्री

हो जाए तो निस्सन्देह आयावर्त्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसको मेटने और झांपने का किसी को सामर्थ्य न होगा। क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं है कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके।'

(भ्रान्तिनिवारण, पृ.४)

(घ) 'इए वेद भाष्य से वेदों का जो सत्य अर्थ है, वह सब सज्जन लोगों के आत्माओं में यथावत् प्रकाशित होगा। तथा वेदों के ऊपर लोगों ने मिथ्या जो व्याख्यान किए हैं, उनकी निवृत्ति भी इस भाष्य से अवश्य होगी।'

(पत्र और विज्ञापन, पृ.३६)

(ङ) 'यह भाष्य ऐसा होगा कि जिससे वेदार्थ से विरुद्ध अब के बने भाष्य और टीकाओं में वेदों में भ्रम से जो मिथ्या दोषों के आरोप हुए हैं, वे सब निवृत्त हो जायेंगे। और इस भाष्य से वेदों का जो सत्य अर्थ है सो संसार में प्रसिद्ध होगा कि वेदों के सनातन अर्थ को सब लोग यथावत् जान लें।'

(ऋ. भा. भूमिका, पृ.२)

(च) 'जो यह मेरा भाष्य बनता है सो तो वेद, वेदांग, ऐतरेय, शतपथ ब्राह्मणादि ग्रंथों के अनुसार होता है। क्योंकि जो-जो वेदों के सनातन व्याख्यान हैं, उनके प्रमाणों से युक्त बनाया जाता है। यही इसमें अपूर्वता है।

(ऋ.भा. भूमिका भाष्यकरण शंकासमा.)

इन महर्षि के स्वयं हृदयस्थ-उद्गारों से अनुप्राणित होकर महर्षि के वेदभाष्य को यदि पाठक जानना चाहते हैं और 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक' इस महर्षि के अपूर्व वचन का यदि विद्याप्रेमी जिज्ञासु विद्वज्जन यथार्थ रूप देखना चाहते हैं, और ईश्वरोक्त वेद शाश्वत हैं, इसमें परस्पर विरोधी, सृष्टि नियम से प्रतिकूल, अवैज्ञानिक तथा असंगत बात नहीं है, इसे जानना यदि आप लेशमात्र भी इच्छा रखते हैं अथवा हृदय से सत्यासत्य का निष्पक्ष निर्णय चाहते हैं, तो महर्षि के वेदभाष्य को पढ़िये।

महर्षि के वेदभाष्य को समझने के लिए महर्षि लिखित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को अवश्य पढ़िये। देखिए महर्षि के वचन-

"जो कोई भूमिका के बिना केवल वेद ही लिया चाहे, सो नहीं मिल सकते।"

(पत्र और विज्ञापन, पृ.१८ पर)

महर्षि स्वयं यह आदेश दे गये हैं कि मेरा भाष्य भूमिका के बिना समझ में नहीं आ सकता। अतः वेद भाष्य को भूमिका के बिना न बेचा जाए।

(आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' की उपक्रमणिका का सम्पादित अंश)

धारावाहिक-13 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

हे अर्जुन! असक्त होकर, और यह सोचकर कि कर्म तुझे करना है, फल भगवान् के अर्पित करना है, जीवन-क्षेत्र में कदम बढ़ाये जा। याद रख, सकाम-भावना एक ज्वर है, बुखार है। विगतज्वर होकर काम कर। सकाम-भावना एक ज्वर है तभी तो अनुकूल फल न मिलने पर मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है, अधीर हो जाता है। इस ज्वर से मुक्त होने का उपाय एक ही है, और वह है 'निष्काम-भावना' से कर्म करना, निष्कर्मण्यता के स्थान में जीवन में निष्कामता को उत्पन्न करना।

फल की आशा क्यों न करें?-

इस प्रकरण में यह प्रश्न खड़ा होना स्वाभाविक है कि जब हम कर्म करते हैं तब फल की आशा क्यों न करें? क्या सिर्फ इसलिये कि अनुकूल फल नहीं होगा, तो हमें दुःख होगा? सिर्फ उस दुःख से बचने के लिये? यह तो कायरता है। फल की आशाा न करने का सिर्फ व्यावहारिक नहीं, कोई दार्शनिक आधार भी होना चाहिये। वह दार्शनिक आधार क्या है? फल की आशा न करने का यह अभिप्राय नहीं है कि हमारे कर्म का फल ही नहीं मिलेगा। इसका आशय सिर्फ इतना है कि जो भी फल मिलेगा, यह जरूरी नहीं कि वह हमारी इच्छा के अनुकूल ही हो। फल हमारे अनुकूल भी हो सकता है, प्रतिकूल भी। फल की अनुकूलता-प्रतिकूलता पर ही मनुष्य सुखी-दुःखी होता है। परन्तु सोचने की बात तो यह है कि कर्म करना तो अपने हाथ में है, फल तो अपने हाथ में नहीं है। फल किसी और शक्ति के हाथ में है। फिर, जो चीज अपने हाथ में नहीं है, उसके लिये हम क्यों सुखी हों, क्यों दुःखी हों, और क्यो उसके साथ हम अपना ऐसा नाता जोड़ें जिससे ऐसा प्रतीत होने लगे कि वह अपने हाथ की चीज है। किसी कर्म के फल उत्पन्न होने में एक कारण नहीं, सैकड़ों कारण हो सकते हैं। संसार कितना विशाल है, उसमें कितने कारण मिलकर किसी कार्य को उत्पन्न करने में सहायक होते होंगे। कुछ कारणों का हमें ज्ञान है, कुछ का नहीं। इस विशाल विश्व में हमीं तो नहीं, लाखों-करोड़ों प्राणी हैं। सभी को सम्मुख रखकर ही तो विश्व की विशाल-दृष्टि से काम हो रहा होगा, हमारी दृष्टि से ही तो विश्व का चक्र नहीं चल रहा। विश्व का संचालन करने वाली दृष्टि समन्वयात्मक दृष्टि है, उसमें छोटे-से-छोटे से लेकर बड़े-से-बड़े तक सभी प्राणी समा जाते हैं। हो सकता है, किसी और के दृष्टिकोण से हमारी इच्छा, और हमारे दृष्टिकोण के किसी और की इच्छा कट जाती हो, परन्तु यह जोड़-तोड़ हमारे बस की चीज तो नहीं, यह तो उसी के बस की है जिसके बही खाते में हम सबका हिसाब दर्ज है। ऐसी अवस्था में संभव मार्ग सिर्फ यह रह जाता है कि हम अपना कार्य करते चलें, और 'इदन्न मम्' कहकर 'फल' को विश्वात्मा के चरणों में रख दें, हम अपनी संकुचित दृष्टि से न देखकर विश्वात्मा की विशाल दृष्टि से देखें। इसी भाव को प्रकट करने के लिए श्रीकृष्ण ने गीता में अर्जुन को विराट् स्वरूप का दर्शन कराया है।

विराट-स्वरूप के दर्शन-

विराट्-स्वरूप के दर्शन कराने का अभिप्राय यह नहीं है कि कृष्ण महाराज ने मुंह खोला और उनकी दाढ़ी में कहीं रथ फंस रहे थे, कहीं भीष्म-द्रोण अटक रहे थे। विश्व के संचालन में जिस विशाल-दृष्टि से काम हो रहा है, जिस प्रकार करोड़ों प्राणियों के कर्मों का समन्वय हो रहा है, उसी की तरफ संकेत करके अर्जुन को कहा गया-

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथसहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।।

संसार के संचालन में जिन सैकड़ों, हजारों दृष्टिकोणों का, नाना तथा विविध कारणों का समन्वय करना पड़ता है, उसे जानने के बाद कोई व्यक्ति अपने को केन्द्र मानकर बात न करगा, इसलिये श्रीकृष्ण महाराज ने अर्जुन की आंखें खोलीं, और उसे 'विराट्-स्वरूप' का दर्शन कराया। अर्जुन को मानो दीखने लगा कि कि कर्म-चक्र में पड़कर भीष्म, द्रोण, सूतपुत्र, राजे-महाराजे विश्व के नियामक की मानो दंष्ट्रा में पिसते चले जा रहे हैं। अर्जुन की जो संकुचित दृष्टि थी, जिससे वह किसी को भाई, किसी को भतीजा, किसी को चचा और किसी को ताऊ समझे बैठा था, और जो-कुछ होने जा रहा था उसे देखकर आंसू बहा रहा था, वह विशाल दृष्टि में परिणत हो गयी, और उसे मानो दीखने लगा कि कर्मों के चक्र को चलाने-फिराने वाला, विश्व का सूत्रात्मा इस चक्र को किधर चलाने जा रहा है। इसी भाव को गीता में यूं कहा गया है-

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताःप्रत्यनीकेषु योधाः।।

उस समय जो पाप का प्रचण्ड वेग उठ खड़ा हुआ था उसका विश्व के संचालक को नाश तो करना ही था। अर्जुन कितना ही रोता, इस पाप का, अव्यवस्था का अन्त-समय आ गया था। श्रीकृष्ण ने अर्जुन का ज्ञान-नेत्र खोलकर उसे कार्य-कारण के अखंड, निर्दय, निर्मम, नियम का संचालन दिखाकर मनुष्य की संकुचित दृष्टि के स्थान पर विश्व की विशाल दृष्टि का दर्शन करा दिया। अर्जुन को समझ पड़ गया कि वह तो इस सम्पूर्ण काण्ड में निमित्त-मात्र होगा, उकसे बिना भी सब-कुछ होकर रहेगा। विश्व-नियामक शक्ति के इस 'विराट्-रूप' के दर्शन करते ही अर्जुन के सन्देह दूर हो गये और 'निष्काम-कर्म' का संदेश उसके भीतर इतना घर कर गया कि वह भीरुता और क्लीवता छोड़कर, संसार की असारता देखकर उससे भागने के स्थान पर वीर-पुरुष की तरह युद्ध के लिये डटकर खड़ा हो गया। अब उसे ऐसा अनुभव होने लगा मानो कर्म में तन-मन से लगे होने पर भी वह कुछ नहीं कर रहा। गीता में इस मनोभाव को प्रकट करते हुए लिखा है-

(आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व ग्रंथ से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला-5

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

एक साधु रहता था किसी जंगल में। कितने ही लोग उसके दर्शन करने को जाते। जो भी जाता उसे शान्ति मिलती। एक दिन उस देश के राजा भी गये। देखा साधु एक वृक्ष के नीचे बैठे हैं। सर्दी और वर्षा से बचने का कोई प्रबन्ध नहीं है। राजा ने कहा, 'महात्मन्! यहाँ तो बहुत कष्ट होता होगा, आप मेरे साथ चलिये, महल में रहिये।' साधु पहले तो माना नहीं, राजा ने बहुत आग्रह किया तो बोले, 'अच्छा चलो।' महल में आये। एक सुन्दर कमरे में ठहरे। हर समय नौकर उपस्थित रहने लगे। अच्छा भोजन मिलने लगा। तीन मास व्यतीत हो गये। राजा उसकी पूजा करते रानी उनमें श्रद्धा रखतीं। एक दिन रानी नहाने के लिये स्नानागार में गई। नहा कर उठी तो वह हीरों का हार पहनना भूल गई, जो उसने उतार कर स्नानागर में रख दिया था। हार वहीं पड़ा रहा। रानी के पश्चात् साधु स्नानागार में गया, हार को देखा, उठा कर अपनी कोपीन में छुपा लिया। स्नानागार से निकले, महल से बाहर चले गये। कुछ देर पश्चात रानी को हार का ख्याल आया, दासी से बोली, 'स्नानागार में छोड़ आई हूँ, उसे ले आओ।' परन्तु वहाँ तो हार नहीं था। खोज होने लगी। पूछा गया गुसलखाने में रानी के पश्चात कौन गया था? पता लगा कि महात्मा गये थे। महात्मा की खोज होने लगी। महात्मा मिले नहीं। राजा को ज्ञात हुआ तो उसने सिपाहियों को आज्ञा दी, 'उस साधु के पीछे जाओ, उसे पकड़ कर ले आओ।' इधन वे महात्मा शहर से बाहर निकले। जंगल में चले गये। दिन भर चलते रहे। पाँव थक गये। भूख भी सताने लगी तो जंगल का एक फल तोड़ कर खा गये। फल था एक औषधि, उससे दस्त होने लग गये। इतने दस्त आये कि महात्मा निर्बल हो गये। तभी उन्हें हार का ध्यान आया। उसे देखते ही बोले, 'मैं इसे क्यों उठा लाया? मैंने चोरी क्यों की?' उसी समय वापस लौट पड़े। आधी रात के समय राजा के महल पर पहुँचे। आवाज दी। राजा जागे। महात्मा ने उनके पास जाकर कहा, 'राजन् आपका यह हार है ले लो। मैं यहाँ से उठा कर ले गया था। मुझ से अपराध हुआ है। मैं क्षमा मांगने आया हूँ।' राजा ने आश्चर्य से कहा, 'वापस ही लाना था तो तुम इसे ले क्यों गये थे?' साधु ने कहा, 'राजन्! क्रोध न करना, तीन मास तक मैं तुम्हारा अन्न खाता रहा उससे मेरा मन पापी हो गया, जंगल में जाकर दस्त आये, शरीर शुद्ध हो गया। तेरे अन्न का प्रभाव समाप्त हो गया। मैंने वास्तविकता को जाना और वापस आ गया।'

यह है अन्न का प्रभाव। इसीलिए यूनान के फिलास्फर पैथागोरस ने कहा था, 'तुम मुझे बताओ कौन आदमी क्या खाता है, मैं तुम्हें बताऊँगा कि वह क्या सोचता है।'

तभी पूज्य स्वामी जी ने अपनी घड़ी को देखा, बोले, 'हम मन की बात चिल्लाते रहे, यहाँ पूरा घण्टा चला गया। अच्छ, बाकी फिर।'

।।ओ३म् शम्।।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

दूसरे पार जाकर शिष्य ने कहा, 'देखा गुरुजी, आप कहते थे पैसा इकट्ठा करने की आवश्यकता नहीं, अब देखिये यदि हमारे पास पैसे न होते तो आज आपत्ति आती कि नहीं।' गुरु ने हँसते हुए कहा, 'सोच कर देख बेटा। पैसा एकत्रित करने से तुम्हें सुख नहीं मिला। पैसे को देने से मिला। सुख त्याग में है एकत्रित करने में नहीं।'

परन्तु त्याग का यह अर्थ नहीं कि कमाना भी बन्द कर दो। वेद कहता है सौ हाथों से कमाओ, पाँच सौ हाथों से खर्च कर दो। जो कमाया है, उस पर सांप बनकर न बैठ जाओ। जलासपुर जट्टाँ में एक सज्जन रहते थे, जीवन भर मैंने उन्हें कुर्ता पहनते हुए नहीं देखा। एक बार मैंने पूछा, 'श्रीमान आप कुर्ता क्यों नहीं पहनते?' वे बोले, 'मैं शरीर प्रयोग करता हूँ।' जब वे सज्जन मरे तो इसके घर से कई बर्तनों में बन्द किया हुआ धन मिला। इस धन का इन्हें क्या लाभ मिला। जैसे पंजाब नेशनल बैंक के चपरासी के लिए बैंक में पड़े हुए लाखों रुपये। न वह उन लाखों रुपयों का प्रयोग कर सकता है, न ये करते हैं। चपरासी उनसे अच्छी दशा में है, क्योंकि वह अपनी ड्यूटी पूरी करने के पश्चात निश्चिन्त होकर होकर सुख की नींद सोता है, यह अभागा मनुष्य हर समय चिन्ता में डूबा रहता है, सो भी नहीं पाता।

चौथा साधन है सदा ईश्वर को स्मरण रखना, उसके नाम का जाप करना। ऐसा करने से मन ऊपर उठता है, वश में रहता है। कुछ लोग कहते हैं कि क्या ईश्वर के नाम का जाप-ओ३म् का जाप और गायत्री मन्त्र का जाप हर समय हो सकता है? उठते, बैठते, चलते फिरते भी हो सकता है? मैं कहता हूँ कि अवश्य हो सकता है। ओ३म् हमारी माँ है। गायत्री हमारी माँ है। संसार के अन्दर अपनी माँ को पुकारते समय क्या हम यह सोचते हैं....कि हम किस दशा में हैं। बच्चा किसी भी दशा में हो, कीचड़ में लथपथ हो या नहा धोकर अच्छे कपड़े पहने हुए, जब भी वह माँ को बुलायेगा, और उसकी पुकार माँ के कानों में पहुँचेगी, तो वह पुकार को सुनेगी अवश्य। बच्चा यदि कीचड़ में लथपथ है, धूल से अटा पड़ा है, तो भी वह उसे उठाकर हृदय से लगा लेगी। ईश्वर हमारी माँ है। उठते, बैठते, चलते, फिरते, सोते, जागते किसी भी समय उसे पुकारना और याद करना ठीक है।

तुलसी अपने राम को रीझ भजो या खीज।
भूमि पड़े उपजेंगे ही, उल्टे सीधे बीज।।

जो लोग हर समय ईश्वर को याद करते हैं, ईश्वर को अपने सामने मानते हैं, उनके मन में और वाणी में एक महान शक्ति जाग उठती है। तानसेन के गुरु थे स्वामी हरिदास। अकबर ने एक बार उनका गाना सुना। मोहित हो गया। तानसेन से बोला, 'तू ऐसा क्यों नहीं गा सकता?' तानसेन ने कहा, 'मैं गाता हूँ आपके लिए। वे गाते हैं ईश्वर के लिए। मैं हूँ आपके दरबार का गवैया, वे हैं ईश्वर के दरबार के गायक। मुझमें और उनमें वही अन्तर है जो आपके और ईश्वर के दरबार में है।' और जो कुछ तानसेन ने कहा वह मिथ्या नहीं। जो लोग ईश्वर का नाम लेते हैं, हर समय उसके गुण गाते हैं, उनके मन की दिशा दिन प्रतिदिन ऊपर से ऊपर होती चली जाती है। वे सारे परिवार को एक समझने लग जाते हैं। उस अवस्था पर पहुँचते हैं जहाँ वेद प्रत्येक मानव को पहुँचने का सन्देश देता है। वेद कहता है, 'तुम में से कोई छोटा या बड़ा नहीं, ईश्वर ने सबको एक जैसा बनाया है, मिलकर आगे बढ़ो, सौभाग्य और आनन्द के लिये, सुख और शान्ति के लिये।' वेद के इस सन्देश को समस्त संसार यदि सुन सके, यदि इस पर आचरण कर सके तो फिर किसी साम्यवाद और समाजवाद को आवश्यकता नहीं रहती है। वेद कहता है ईश्वर तुम्हारा पिता है, धरती तुम्हारी माता है, तुम सब भाई भाई हो। इससे बड़ा साम्यवाद भी कोई हो सकता है। परन्तु यह दशा उत्पन्न होती है उस समय जब मनुष्य हर समय ईश्वर का स्मरण करता है। उसका नाम लेता है, उसके गीत गाता है।

मन के सम्बन्ध में दो बातें और कहनी हैं, एक यह कि मन है क्या? बहुत शोर सुनते हैं इसका। यह कोई राजा या महाराजा नहीं, प्रधान मंत्री या राष्ट्रपति नहीं, यह तो एक नौकर है, जो भगवान् ने आत्मा को दिया। तुम्हारा मुण्डू है। जड़ है। इसलिए मिला कि इससे काम लो, इसलिए नहीं कि इसके हाथों में अपनी नकेल दो। जब सृष्टि नहीं थी और प्रकृति रजोगुण, तमोगुण सतोगुण से रहित, परमाणुओं का विशाल सागर बन के सोई पड़ी थी, तब ईश्वर की प्रेरणा शक्ति ने इस को कहा, 'जाग'। जागी वह। इसमें महात्तत्व उत्पन्न हुआ उससे समष्टि बुद्धि उत्पन्न हुई। तब तन्मात्रायें उत्पन्न हुईं, मन बुद्धि और चित्त उत्पन्न हुए। ये सब के सब तो प्रकृति के परिवर्तित रूप हैं। प्रकृति है जड़। इसलिये ये सब के सब भी जड़ हैं। मन भी जड़ है। इस जड़ वस्तु के पीछे भगते फिरें इसके संकेतों पर नाचते रहें, तो क्यों हम तो जड़ नहीं। इसे हमारी इच्छा के अनुकूल चलना चाहिये, हमें इसकी इच्छा के अनुसार नहीं।

दूसरी बात यह कि मन बनता कैसे है? आकाश या पाताल से नहीं आता। जो अन्न हम खाते हैं उससे मन बनता है। जो कुछ भी हम खाते हैं, शरीर के अन्दर जाकर उसके तीन भाग हो जाते हैं। सबसे ठोस भाग मल बनकर बाहर निकल जाता है। उससे सूक्ष्म भाग से शरीर की शक्ति बनती है। सबसे सूक्ष्म भाग मन बन जाता है। इसीलिये कहते हैं कि जैसा अन्न खाओगे वैसा मन बनेगा। जो व्यक्ति गंदा खोटा अन्न खाता है, तो उसका मन कभी अच्छा नहीं होगा। अन्न को जिस भावना से कमाया हो, बनाया हो और तैयार किया हो, सब का प्रभाव मन पर पड़ता है। बूढ़े भीष्म पितामह जब तीरों की शैया पर लेटे थे और धर्म ज्ञान की बड़ी बड़ी बातें कर रहे थे तब द्रौपदी ने उनसे कहा, 'पितामह! इस समय तो आप बहुत बड़ी बड़ी बातें कर रहे हैं, बहुत अच्छी बातें हैं ये ज्ञान की। परन्तु जब दुर्योधन और दुःशासन ने भरी सभा में मेरा अपमान किया, उस समय आपका यह धर्म और ज्ञान कहाँ था?' भीष्म पितामह दुःख के साथ बोले, 'तू ठीक कहती है बेटी! उस समय मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। दुर्योधन का पाप भरा अन्न मैं खा रहा था उसने मेरे मन को मलिन कर दिया। अर्जुन के तीरों से रक्त निकला, कई सप्ताह से निकल रहा है, तो उस अन्न का प्रभाव समाप्त हो गया।'

काव्यायन

प्यार के रंग में

❑महेश चन्द्र द्विवेदी

हेमंत की शीतल रातें हैं बीत गईं,
जब ठिठुरन होती थी अंग-अंग में
वसंत ने प्रकृति व पुरुष दोनों को
रंग दिया अहर्निश प्यार के रंग में
बाल-सूर्य अब उगते ही मुस्काता
फैलाता प्रकाश घर व आंगन में
मयूर है नाचता मयूरी को मोहने
गौरैया है चहकती चिरौटा संग में
मृग-नाभि में कस्तूरी है महक रही
बिखेर रही मदालस्य पशु-विहंग में
कली में उमंग है, भ्रमर मलंग है
प्रीति का खुमार रति व अनंग में
रम्भा, मेनका, उर्वशी हैं उतर आईं
इस धरा को भरने नेह की तरंग में
सीता को वरण हेतु आतुर हुए राम
एकमात्र लक्ष्य है शिव के सारंग में
वसंत ने प्रकृति व पुरुष दोनों को
रंग दिया है ऐसा प्यार के रंग में

–ज्ञान प्रसार संस्थान, 1/137, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

क्या कर लेगा करोना

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

बने न खाँसी और जुकाम, क्या कर लेगा कोरोना।
हाथ जोड़कर करें प्रणाम, क्या कर लेगा कोरोना।

गप्प गोष्ठी नहीं जुटाएँ, भीड़भाड़ से बचे रहें।
नहीं छोड़ना अपना धाम, क्या कर लेगा कोरोना।

सैनिटाइजर या साबुन से, भलीभांति निज हाथ धुलें।
खर्च न होगी एक छदाम, क्या कर लेगा कोरोना।

आवश्यक हो बाहर जाना, मास्क लगायें निज मुख पर।
घर पर ही लें प्रभु का नाम, क्या कर लेगा कोरोना।

संयम से संकल्प निभाना, अद्भुत मारक यंत्र मिला।
साफ-सफाई उत्तम काम, क्या कर लेगा कोरोना।

किसी से मिलना-जुलना हो तो, दूरी रखें एक मीटर।
प्रीतिभोज पर लगे लगाम, क्या कर लेगा कोरोना।

शासन और प्रशासन के भी निर्देशों को अपनाएँ।
मुँह के बल वह गिरे धड़ाम, क्या कर लेगा कोरोना।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22

नीति प्रसून

❑रामा आर्य 'रमा'

मानव मन प्रतिबिम्ब है, दर्पण स्वच्छ समाज।
बिन संस्कृति संस्कार के, होते काज अकाज।।

पहली सीढ़ी है 'रमा', साहस, निश्चय, धीर।
सहते हैं जिससे नहीं, कभी हार की पीर।।

नहीं नियंत्रण क्रोध पर, हो जाते असहाय।
किन्तु मौन होता 'रमा', जिसका सहज उपाय।।

अपने तीर कमान से, करते रहते वार।
'रमा' सिपाही कलम के, प्रतिपल है तैयार।।

पुण्य नहीं यदि कर सको, करो नहीं तुम पाप।
चहुँदिशि है बिखरा 'रमा', प्रभु का पुण्य प्रताप।।

मांझी दृढ़ विश्वास है, साहस है पतवार।
कर्मठता की नाव है, ले जाती उस पार।।

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

न सहेंगे अब

❑डॉ. कैलाश निगम

ताप द्वेष, दम्भ का
प्रचण्ड चढ़ा नाविक को
डूब रही नाव,
पतवार को गहेंगे अब।
जाति-वर्ग-धर्म-साम्प्रदाय-नद
सम्मुख हैं
राष्ट्रधारा छेड़
इनमें नहीं बहेंगे अब।
सारे षडयंत्र शत्रुओं के
करके विफल
ढुलमुल नीति या
अनीति न सहेंगे अब।
लेना है शपथ,
एक हो रहेंगे भारत में
और किसी कोने देशद्रोही
न रहेंगे अब।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

होली का त्योहार

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

होली का त्योहार,
स्नेह, स्निग्ध संसार।
रुधिर रंग रसधार,
हास्य व्यंग्य के धार।।
हास्य व्यंग्य के वार,
दादा भी देवर लगें।
गले मिलो भर प्यार,
दुख द्वेष सब ही भगें।।

खेल रहे हैं रंग,
कन्त-कामिनी संग।
मन भर अतुल उमंग,
ज्यों रति और अनंग।।
ज्यों रति और अनंग,
स्नेह-सरोवर उर भरे
हास्य व्यंग्य से तंग,
सजनी साजन को करे।।

(ब्रजेश विनोद 'से)

हर्ष-चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

सीमा रहित अनन्त को पार पाना नहीं,
हार स्वीकारना हमने जाना नहीं।।
चाहिए तो बहुत 'हर्ष' को विश्व से-
लक्ष्य पाये न जो, वो निशाना नहीं।।

चलते चलते रहें पग यही है बहुत,
बैठे बैठे कभी लक्ष्य मिलता नहीं।
आत्मसाक्षात् करना ही है लक्ष्य अब-
कर्म बिन साधना पुष्प खिलाना नहीं।।

–अक्ष मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

श्रीमती महादेवी वर्मा की 113वीं जयन्ती पर

जाग, तुझको दूर जाना

❑श्रीमती महादेवी वर्मा

चिर सजग आँखें उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना!
जाग तुझको दूर जाना!

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कम्प हो ले!
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले;
आज पी आलोक को डोले तिमिर की घोर छाया
जाग या विद्युत शिखाओं में निठुर तूफान बोले!
पर तुझे है नाश पथ पर चिन्ह अपने छोड़ आना!
जाग तुझको दूर जाना!

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे यह फूल दे दल ओस गीले?
तू न अपनी छाँह को अपने लिये कारा बनाना!
जाग तुझको दूर जाना!

वज्र का उर एक छोटे अश्रु कण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया!
सो गई आँधी मलय की बात का उपधान ले क्या,
विश्व का अभिशाप क्या अब नींद बनकर पास आया?
अमरता सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर मे बसाना?
जाग तुझको दूर जाना!

कह न ठंडी साँस में अब भूल वह जलती कहानी,
आग हो उर में तभी दृग में सजेगा आज पानी;
हार भी तेरी बनेगी माननी जय की पताका,
राख क्षणिक पतंग की है अमर दीपक की निशानी!
है तुझे अंगार-शय्या पर मृदुल कलियां बिछाना!
जाग तुझको दूर जाना!

(कविता कोश से)

व्यंग्य बाण

❑हुल्लड़ मुरादाबादी

कर्जा देता मित्र को, वह मूर्ख कहलाए,
महामूर्ख वह यार है, जो पैसे लौटाए।

बिना जुर्म के पिटेगा, समझाया था तोय,
पंगा लेकर पुलिस से, साबुत बचा न कोय।

गुरु पुलिस दोऊ खड़े, काके लागूं पांय,
तभी पुलिस ने गुरु के, पांय दिए तुड़वाय।

पूर्ण सफलता के लिए, दो चीजें रखो याद,
मंत्री की चमचागिरी, पुलिस का आशीर्वाद।

नेता तो कहता गया, शरम न तुझको आए,
कहीं गधा इस बात का, बुरा मान न जाए।

बूढ़ा बोला, वीर रस, मुझसे पढ़ा न जाए,
कहीं दांत का सेट ही, नीचे न गिर जाए।

ठुल्लइ काले रंग पर, रंग चढ़े न कोय,
लक्स लगाकर कांबली, तेंदुलकर न होय।

बुरे समय को देखकर, गंजे तू क्यों रोय,
किसी भी हालत में तेरा, बाल न बांका होय।

(अमर उजाला से साभार

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज ने विद्यालय में बांटी स्टेशनरी

कोटा, ३ मार्च। आर्य समाज दिल्ली एवं राजस्थान के पदाधिकारियों द्वारा नई दिल्ली स्थित जनकपुरी के प्राइमरी विद्यालय में शिक्षण सामग्री वितरित की गई। आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री सतीश चड्ढा, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा तथा राकेश चड्ढा द्वारा नई दिल्ली स्थित जनकपुरी बी-३ ए के एसडीएमसी प्राइमरी विद्यालय में छात्रों को स्टेशनरी का वितरण किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को ज्यामेट्री बॉक्स, पेन व अन्य स्टेशनरी वितरित की गई। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारम्भ ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के मंत्रों के साथ हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्या निधि सक्सेना द्वारा आगंतुक अतिथियों का पीत वस्त्र पहनाकर स्वागत किया गया। श्री अर्जुनदेव चड्ढा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि विद्यालय में प्राप्त ज्ञान को मन लगाकर ग्रहण करें और अपने जीवन को श्रेष्ठ बनायें। जीवन में अच्छी बातों का समावेश करें जिससे आपका व्यक्तित्व ऊंचा बने। केन्द्रीय सभा के महामंत्र सतीश्या चड्ढा ने कहा कि विद्या वह धन है जिसे अन्य कोई चुरा नहीं सकता है। संसार में जो दूसरे प्रकार के धन होते हैं उसे कोई दूसरा चुरा सकता है, छीन सकता है, किंतु विद्यारूपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, इसे जितना खर्च करेंगे ये उतना ही बढ़ता चला जाएगा। इसलिए जीवन को विद्यावान बनाएं।

कार्यक्रम में छात्रों को संबोधित करते हुए श्री राकेश चड्ढा ने कहा कि गायत्री मंत्र से अपनी बुद्धि बढ़ाने के लिए प्रार्थना करें, उसपर ध्यान केंद्रित करें, आपकी बुद्धि तीव्र होती चली जाएगी। विद्यालय प्रशासन द्वारा छात्रों को स्टेशनरी उपलब्ध कराने पर आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय परिवार द्वारा आगंतुक अतिथियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए छोटे गमलों में लगे पौधे भेंट किए। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ के साथ हुआ। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

सीतापुर-समाचार

आदर्श विवाह

सीतापुर, ०६.०३.२०२०। ग्राम ननोइया, रामकोट, जिला सीतापुर निवासी श्री सुरेश चन्द्र आर्य की गुरुकुल पूठ में पढ़ी पुत्री मधुमिता का पाणिग्रहण संस्कार गुरुकुल के ही ब्र.धर्मवीर आर्य सात्विक निवासी कोसीकलाँ मथुरा के साथ आचार्य प्रदीप आर्य, मेरठ के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। यह संस्कार जातीय बंधन तोड़कर हुआ। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष थे स्वामी रामानंद सरस्वती। इस शुभावसर पर स्वामी मंगलाचरण (महोली) ने नव दम्पति को आशीर्वाद प्रदान किया। विवाह संस्कार को श्री रामेन्द्र आर्य, चिलवारा, डॉ.सदानन्द आर्य, प्रेमचन्द्र आर्य, गोपीकृष्ण आर्य, नेतराम आर्य के अलावा बड़ी संख्या में उपस्थित होकर क्षेत्र के नर-नारियों ने गरिमा प्रदान की। आदर्श विवाह लोगों की प्रेरणा और चर्चा का विषय बना हुआ है। शतशः मंगलकामनाएँ। *(रामेन्द्र आर्य)*

मार्मिक अपील

'आर्य्य लोक वार्ता' वैदिक विचारधारा के प्रति जन जन को प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और संकल्प के बलबूते विगत २२ वर्षों से अनवरत प्रकाशित हो रहा है। इसका मुख्य आधार है, हमारे ऋत्विक्/होता/संरक्षक-सदस्य। अस्तु आज की विषम परिस्थितियों में हमारा आपसे विनम्र अनुरोध है कि अविलम्ब आपना आर्थिक योगदान हमें उपलब्ध कराकर वैदिक धर्म और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के प्रचार-प्रसार इस अभियान में शामिल होकर पुण्य के भागी बनें

सहयोग राशि ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद/चेक द्वारा जमा कर सकते हैं। इसकी सूचना हमें मोबाइल या पत्र द्वारा अवश्य ही दें। इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्वाध्याय केन्द्रों पर उनके केन्द्राध्यक्ष/संचालक के पास जमा कर सकते हैं। अधिकृत स्वाध्याय केन्द्रों की यहाँ सूची प्रकाशित की जा रही है-

आर्य लोक वार्ता का गौरवपूर्ण अध्याय

स्वाध्याय केन्द्र तथा केन्द्राध्यक्ष/संचालक तालिका

श्री पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ**	(7309820587)
श्री आचार्य आनन्द मनीषी, वेदमंदिर, राजाजीपुरम, **लखनऊ**	(9935391794)
श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, **लखनऊ**	(9415956866)
श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**	(9335240899)
श्री डोरीलाल आर्य, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**	(9889090411)
श्री बालगोविन्द पालीवाल, आर्य समाज, गोमती नगर, **लखनऊ**	(9792373494)
डॉ. मोहन लाल अग्रवाल, आर्य समाज, लालबाग, **लखनऊ**	(9454711138)
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', आर्य समाज, चौक, नेवाजगंज, **लखनऊ**	(9919790264)
श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, बहादुर पुर, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री भानु प्रताप सिंह चौहान, जानकीपुरम, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', आर्य समाज, **सीतापुर**	(9793296829)
श्री पं.नेतराम आर्य, शास्त्री, (ग्रामीण क्षेत्र), **सीतापुर**	(9919747948)
श्री पं.राजकुमार शास्त्री, पारा रमनगरा, **सीतापुर**	(7651905966)
डॉ.सत्य प्रकाश, आर्य समाज, सण्डीला, **हरदोई**	(9450858750)
श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, जानकीपुरम्, **लखनऊ**	(9452132006)

लखनऊ-समाचार

'काव्यक्षेत्रे' काव्य गोष्ठी एवं सम्मान समारोह

लखनऊ, ८ मार्च। रंगपर्व होली तथा अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर काव्यक्षेत्र साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में भवानी आई टी आई कॉलेज मड़ियांव समागर में सरस काव्य गोष्ठी एवं सम्मान कार्यक्रम नरेन्द्र भूषण की अध्यक्षता में आयोजित हुआ जिसमें डॉ.अजय प्रसून मुख्य अतिथि तथा शोभा दीक्षित भावना व कुमार तरल विशिष्ट अतिथि थे। संस्था अध्यक्ष हरि मोहन वाजपेयी माधव के कुशल संचालन में हास्य, व्यंग्य, शृंगार रसों से परिपूर्ण काव्यधारा प्रवाहित हुई। मधुर कंठ से वाणी वंदना के प्रखर स्वर साधक कुमार तरल ने की-'देवि चरणों में समर्पित ये सुमन आराधना के'। चन्द्र देव दीक्षित ने मुक्तकों से नारी सशक्तीकरण को रेखांकित किया-'आँखों में आकाश भरा है, साँसों में विश्वास भरा है'। गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' ने कोरोना और मिलावट जैसे समसामयिक विषयों को हास्य व्यंग्य के माध्यम से लपेटा-'कोरोना का डर सवार है, दूर दूर से नमस्कार है'। सरस छंद शिल्पी मनोज कुमार मनुज ने राधा-कृष्ण होली प्रसंग को जीवंत किया-'राधा जी मगन भई श्याम में, मुरारी में'। संस्था महामंत्री राजेन्द्र कात्यायन ने होली हुड़दंग के रोचक चित्र प्रस्तुत किए-'गली गली में मच गया, होली का हुड़दंग। नाच रहे लोग सब, ज्यों पी ली हो भंग'। हरिमोहन वाजपेयी माधव ने मुक्तक और गजलों से रससिक्त किया-'रंग मेरे उड़ा गया कोई, दिल को मेरे चुरा गया कोई'। मंजुल मंजर ने नारी के विविध रूपों और सामयिक विसंगतियों को स्वर दिया-'गुलशयान सब वीरान हो गए, खंडहर आलीशान हो गए'।

कार्यक्रम में संस्था द्वारा शोभा दीक्षित भावना को 'काव्यक्षेत्रे काव्य किरीट' सम्मान से अलंकृत किया गया। उन्होंने महिला दिवस पर नारी की पीड़ा को व्यक्त किया-'विष को मीरा सा पी लिया हमने, अपने अधरों को सी लिया हमने'। डॉ. अजय प्रसून ने बेटियाँ शीर्षक गीत के माध्यम से नारी विमर्श को उकेरा-'बेटियाँ ही तो हमारी आस हैं, बेटियाँ ही तो सुदृढ़ विश्वास हैं'। कुमार तरल ने आजकल की सामाजिक वक्रता को इस प्रकार शब्दांकित किया-'पसर गयी मधुवन में नागफनी आजकल, फूल और काँटों में खूब ठनी आजकल'। नरेन्द्र भूषण ने गीतिकाओं से भाव विभोर किया-'कहते जिसे, न करते क्यों हो। कहकर बात, मुकरते क्यों हो'। गोष्ठी का समापन सचिव राजेन्द्र कात्यायन के आभार प्रदर्शन से हुआ। अंत में अध्यक्ष माधव ने सभी को गुझिया खिलाकर और गुलाल लगाकर होली की बधाई एवं शुभकानाएँ दीं। *(गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र')*

'दिवाकर एण्ड कम्पनी' का शुभारम्भ

लखनऊ, ४ मार्च। इंदिरा नगर के मध्य भाग में आम्रपाली चौराहा के निकट शिप्रा काम्प्लेक्स, प्रथम तल पर सी.ए.दिवाकर प्रकाश तिवारी द्वारा 'दिवाकर एण्ड कम्पनी-चार्टर्ड एकांउटेंट्स' का शुभारम्भ यज्ञ, हवन पूजन द्वारा सम्पन्न हुआ। वैदिक विद्वानु डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता के आचार्यत्व में सम्पन्न यज्ञ में दिवाकर प्रकाश तिवारी, उनकी पत्नी, माताजी एवं पिता श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, सत्यनारायण ट्रस्ट से सम्बद्ध समाज सेवी श्री चन्द्र भान सिंह, बड़ी संख्या में हितैषियों की उपस्थिति ने कार्यक्रम को मनोहारी बना दिया। प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम पूर्णता को प्राप्त हुआ।

आर्य्य लोक वार्ता

ऋत्विक्-मंडल

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; श्री अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्री पाल प्रदीप, अलीगंज, **लखनऊ**, श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; श्री अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीताजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**, श्री .अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.प्रशिता, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; श्री पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; डॉ.सी.बी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; श्री दीपक कुमार दर्शन, **लखनऊ**; श्री बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; श्री अनूप टण्डन, **मेरठ**; डॉ.वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; श्री नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री आर. सी. यादव, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, **राजस्थान**; श्री नरसिंह पाल एडवोकेट, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; श्री आर.के.शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, **कैजाबाद**; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कृष्णा बजाज, **बरेली**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, **लखनऊ**; श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाँडा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती वेद रतना खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, **लखनऊ**; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, **लखनऊ**; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ**; श्री रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कुमुद गुप्ता, अलीगंज, **लखनऊ**; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; श्री कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुधा चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, निशात गंज, **लखनऊ**; श्री अरुण अमिता विरमानी, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; डॉ.मनोरमा तिवारी, अलीगंज, **लखनऊ**; श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री निशीथ कंसल, विवेकानन्द पुरी, **लखनऊ**; डॉ. भानु प्रकाश आर्य, **लखनऊ**; कर्नल चन्द्रमोहन गुप्त, अलीगंज, **लखनऊ**।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निशिका वाजपेयी
7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा
8799521631

नवोन्मेष
श्री कृष्णा जी

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

(पृष्ठ 1 का शेष)

सरयूबाग अयोध्या में ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक

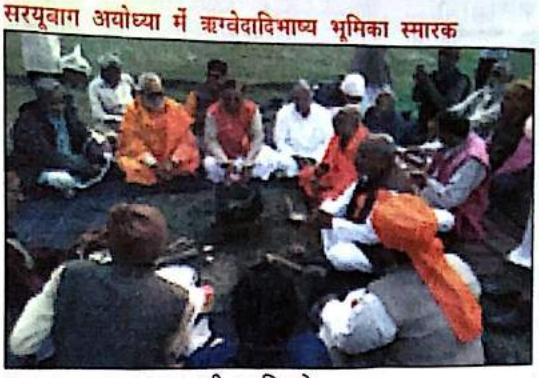

यज्ञ हवन की सुरभि से
सुरभित अवध समीर।
संत समागम यों हुआ–
श्री सरयू के तीर।।

का था, जिनसे वेदभाष्य स्मारक की जमीन का सौदा सम्पन्न हुआ है। मो. इरफान अंसारी अपनी इस सहयोगपूर्ण भूमिका के लिए सदा याद किये जायेंगे। श्री अंसारी का व्यक्तित्व यह प्रमाणित करता है कि मुस्लिम समाज में यदि ओवैसी आदि जिन्ना की मानसिकता वाले लोग मौजूद हैं तो मो.इरफान जैसे *औदार्य मानसिकता वाले भी मौजूद हैं–*

उपजहिं एक संग जल माहीं,
जलज जोंक जिमि गुन बिलराहीं।

देवर्षि मंडल

वैदिक शास्त्रीय विधि से यज्ञ, हवन, सत्संग सम्मेलन की कार्यवाही सम्पन्न की गई। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता (१) आर्य हिन्दू जाति के गौरव स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली ने की तथा उनका सहयोग करने हेतु-

(२)कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य, प्रधान, आर्य समाज, टाण्डा (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रति.सभा, दिल्ली)

(३)जस्टिस एस.एस.कोठारी, पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान।

(४)ठाकुर विक्रम सिंह, आर्यजनों के हृदय सम्राट, नई दिल्ली

(५)आचार्य नागेन्द्र नाथ शास्त्री, कुलपति, निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या

(६)प्रख्यात वैदिक विद्वान् डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, रणवीर रणंजय महा विद्यालय अमेठी

(७)पं.दीनानाथ शास्त्री, वैदिक कर्मकाण्ड विशेषज्ञ, स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती प्रतिष्ठान, रायबरेली

हनुमत् कृपा साम्य

इस अवसर पर एक विलक्षण दृश्य सबने देखा जो श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण और वेदभाष्य मंदिर के मध्य एक बहुत बड़ी समानता को उजागर करता है। यह सभी जानते हैं कि श्रीराम और उनकी जन्मभूमि को बजरंग बली हनुमान का संरक्षण प्राप्त है।

आइये, अब दोनों ही अनुष्ठानों अर्थात् श्रीरामजन्म भूमि मंदिर निर्माण न्यास और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका न्यास की विलक्षण समता का आपको दर्शन कराते हैं। श्रीरामजन्मभूमि मंदिर निर्माण की खबरों से तो भारत के हर अखबार के पन्ने भरे मिलते हैं किन्तु ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका स्मारक न्यास का कोई समाचार शायद ही किसी समाचार पत्र में पढा होगा? 'आर्य लोक वार्ता' के मुख पृष्ठ पर आपको यह अवगत करा रहे हैं।

गत २७ फरवरी २०२० को श्रीराम जन्मभूमि की अपेक्षाओं के अनुरूप पुण्यभूमि अयोध्या के सरयूबाग में वेद मंदिर अर्थात् ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक न्यास की आधार शिला रखी गई, भूमि पूजन के समय अनायास ही श्रीराम कृपा के प्रतिनिधि स्वरूप हनुमत् शक्ति का प्राकट्य हुआ। इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए क्योंकि श्रीरामचन्द्र जी चारों वेदों के मर्मज्ञ थे। हनुमान जी को भी चारों वेदों का ज्ञान था। उन्हें वेद कण्ठस्थ थे। तभी तो ऋष्यमूक पर्वत पर जब प्रथम बार हनुमान जी को श्री रामचन्द्र ने देखा तो उनकी वाणी और उनके वर्णोच्चारण की शुद्धता को सुनकर श्रीराम ने हनुमान जी के संबन्ध में जो अनुमान लगाया, वह इस प्रकार है-

नानृग्वेद विनीतस्य, न यजुर्वेद धारिणः
न सामवेद विदुषः शक्यमेव विभाषितुम।
(वाल्मीकि रामायण)

जिसने ऋग्वेद, यजुर्वेद, समवेद, अथर्ववेद का अध्ययन न किया हो, वह ऐसी वाणी का उच्चारण नहीं कर सकता।

सरयू तीरे - सप्तर्षि मण्डल

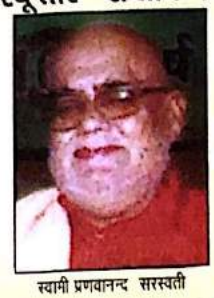

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

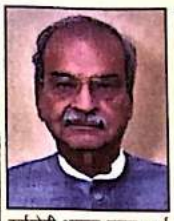

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

जस्टिस एस.एस कोठारी

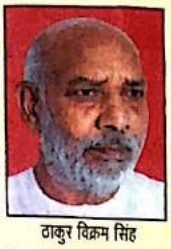

ठाकुर विक्रम सिंह

आचार्य नागेन्द्र शास्त्री

डॉ.ज्वलत कुमार शास्त्री

पं.दीनानाथ शास्त्री

श्रीरामजन्मभूमि स्थल के इर्द गिर्द तो चतुर्दिक हनुमत् शक्ति (वानरी सेना) विराजित रहती है, किन्तु जब २७ फरवरी २०२० को ऋग्वेदादिभाषभूमिका स्मारक की आधारशिला रखी जा रही थी और चतुर्वेद पारायण यज्ञ चल रहा था, आहुतियां दी जा रही थीं, तो सबने देखा कि अयोध्या में मौजूद हनुमत् शक्ति का एक प्रमुख बड़े श्रद्धाभाव से उस यज्ञ स्थल पर आया और एक आसन पर विराजमान हो गया। यह बलिष्ठ लंगूर यज्ञ समाप्ति तक शान्त भाव से बैठा रहा- सारी कार्यवाही देखता रहा और यज्ञ की पूर्णता अर्थात् पूर्णाहुति के बाद शान्त भाव से चला गया। इस दृश्य को कैमरे ने कैद किया जिसे आप चित्र में देख सकते हैं। जिसने भी देखा वह आश्चर्यचकित होकर रह गया। वेदभाष्य स्मारक को हनुमत् शक्ति का आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

२७ फरवरी २०२० की यह तिथि इसलिए और भी अति महत्वपूर्ण हो गई है क्योंकि इसी तिथि को वैदिक विद्वान् आर्य समाज के गौरव डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री का जन्म दिवस था। शास्त्री जी एक महान आचार्य हैं और संस्कारों के ज्ञाता-मर्मज्ञ हैं। संस्कारों की उपादेयता और विधि पर उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। एक इतने बड़े आचार्य ने बड़ी विनम्रता और सहजता से यजमान का आसन सुशोभित किया सारी विधि यां पूर्ण की तथा आगत विद्वानों को यथेष्ठ दक्षिणा से सत्कार किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। शास्त्री जी ने इस अवसर पर ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका स्मारक न्यास के कोष को भी एक लाख ग्यारह हजार एक सौ एक रुपये दान स्वरूप अर्पित किये। इस तरह डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री ने यज्ञ के यजमान बनकर स्मारक न्यास की सफलता की कहानी पहले ही अपने हस्ताक्षर से लिख दी।

२७ फरवरी २०२० तक स्मारक न्यास के शिलान्यास तक जो दानराशि मिली है, उसका विवरण इस प्रकार है–

(१) रु.८,००,००० (आठ लाख) गौरवमूर्ति स्वामी प्रणवानंद जी महाराज के माध्यम से

(२) रु.४,००,००० (चार लाख) कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य

(३) रु.२,००,००० (दो लाख) श्री दीनदयाल गुप्त जी, कोलकाता

(४) रु.१,००,००० (एक लाख) न्यायमूर्ति सज्जन सिंह कोठारी, पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान

(५) रु.१,००,००० (एक लाख) ठाकुर विक्रम सिंह, राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली

(६) रु.१,११,१११ (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह) डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, से.नि.संस्कृत विभागाध्यक्ष, रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी

(७) रु.१,११,१११ (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह) पंडित दीनानाथ शास्त्री, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती प्रतिष्ठान, रायबरेली, (लखनऊ)

कुल योग-रु.१८,२२,२२२ (अठारह लाख बाइस हजार दो सौ बाइस)

समस्त आर्य हिन्दू जनता का पवित्र कर्तव्य है कि आगे बढ़े। वेद की ज्योति को जाज्वल्यमान करने के लिए।

निम्नांकित विवरण के अनुसार जमा पर्ची भरकर चेक/नकद द्वारा पवित्र दान की राशि जमा कर दें ताकि इसकी सूचना भी यथासंभव कार्यकारी अध्यक्ष कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य/पंडित दीनानाथ शास्त्री तथा 'आर्य लोक वार्ता' को भी सूचित करें। अति कृपा होगी। दानदाताओं की नामावली प्रमुखता से प्रकाशित होगी। धन्यवाद।

बैंक का नाम– बैंक आफ बड़ौदा;
खाता धारक–ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका न्यास;
खाता संख्या–05820100010479
कोड–(IFSC)BARBOAYODHY

(आ.लो.वा.न्यूज डेस्क)

लखनऊ-समाचार

असमय ही मुरझा गया - 'वटवृक्ष की छाया' में सुरभित पारिजात

श्री पारिजात नागर का दुःखद निधन

श्री पारिजात नागर जी का जन्म ३ जुलाई १९६० को ग्वालियर (मध्य प्रदेश में हुआ था। बहुआयामी प्रतिभा के धनी पारिजात जी ने रंगमंच, फोटोग्राफी, सिनेमैटोग्राफी में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। 'शबेतार' व 'हारूश' जैसे नाटकों में पारिजात जी द्वारा किया गया रंगदीपन सराहनीय था। आप लखनऊ विश्व विद्यालय के मानवशास्त्र विभाग के संग्रहालय प्रभारी थे। आपने इस ही विभाग से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की थी। आपने थारू जनजाति पर सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में गहन अध्ययन किया। जनजातियों के सम्बन्ध में विशेष रुचि रखने वाले पारिजात जी ने 'आदिवासी जनाधार' नामक अखबार का संपादन कार्य भी किया था।

श्री पारिजात नागर जी प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मभूषण श्री अमृतलाल नागर जी के पौत्र तथा दूरदर्शन में कार्यरत जाने माने नाट्यकर्मी स्व.श्री कुमुद नागर के पुत्र थे। पारिजात जी का निधन ५ मार्च २०२० को हृदयगति रुक जाने के कारण हुआ। आपके परिवार में शिक्षाविद् पत्नी डॉ.शोभना नागर तथा दो बेटियां- इषा नागर और इरा नागर हैं। -संजय माथुर, मीडिया विशेषज्ञ, गोमती नगर

शान्ति यज्ञ एवं शोक सभा

स्व.पारिजात नागर की पुण्य-स्मृति में वैदिक विधान के अनुसार शान्ति यज्ञ उनके नारायण नगर स्थित आवास पर दिनांक ०८.०३.२०२० को सम्पन्न हुआ। डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता) के आचार्यत्व में सम्पन्न इस यज्ञ में स्व. नागर के समस्त पारिवारिक जनों, इष्ट मित्रों, रंगकर्मियों एवं साहित्यसेवियों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती शोभना नागर, श्री ए.पी. ओझा (सम्पादक, जजमेंट आजतक), श्रीमती सुषमा ओझा के अलावा नगर के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों ने पारिजात जी की प्रतिभा को नमन किया। यज्ञ में यजमान की प्रक्रिया स्व.नागर की पुत्रियों- इषा एवं इरा ने पूरी की।

फिल्म निर्माता निर्देशक संजय माथुर, प्राचार्या श्रीमती सागरिका माथुर सहित समस्त पारिवारिक जनों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से स्व.पारिजात को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा यज्ञ में आहुति दी। अपने विशेष वक्तव्य में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने स्व.पारिजात के सद्गुणों पर प्रकाश डाला। आपने कहा- साहित्य गौरव पितामह श्री अमृतलाल नागर एवं पिता श्री कुमुद नागर की परम्परा में पारिजात अतुलनीय प्रतिभा एवं मेधा के धनी थे और अपने सहकर्मियों एवं मित्रों में अत्यधिक लोकप्रिय थे। 'अमृत फिल्मस' के निर्देशक श्री अमृत खरे ने अपने संदेश में श्री नागर के निधन को साहित्य जगत की एक अपूरणीय क्षति बताया। शान्तिपाठ के साथ दो मिनट मौन रहकर दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

अमित-रश्मि की वैवाहिक जयन्ती

गुरुवार, २०.०२.२०२०। महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर १८१डी, शिव विहार कालोनी, पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ में श्री अमित त्रिपाठी एवं श्रीमती रश्मि त्रिपाठी की वैवाहिक जयन्ती पर यज्ञ का आयोजन हुआ। परिवार के समस्त सदस्यों- श्रीमती सरला आर्य, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, आलोक वीर आर्य, श्रीमती शशि त्रिपाठी एवं मलयज त्रिपाठी ने यज्ञ में भाग लिया तथा हार्दिक शुभकामनाएँ अर्पित कीं।

जन्म दिवस

आर्य लोक वार्ता के सम्पादक श्री आलोक वीर आर्य का ५९वाँ जन्म दिवस १८१डी, शिव विहार कालोनी, पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ में वैदिक यज्ञ के आयोजन के साथ मनाया गया। यज्ञ में समस्त पारिवारिक जनों ने भाग लिया तथा श्री आलोक के प्रति हार्दिक शुभ कामनाएँ अर्पित कीं। यज्ञ में डॉ.वेद प्रकाश आर्य, श्रीमती सरला आर्य, श्रीमती शशि त्रिपाठी, अमित त्रिपाठी, रश्मि त्रिपाठी एवं मलयज त्रिपाठी ने भाग लिया। इस अवसर पर विशेष अतिथि श्री धीरेन्द्र शंकर वाजपेयी, श्रीमती निमिषा वाजपेयी, वेदांजलि एवं वेदांश का आगमन उत्साह वर्द्धक रहा।